A STUDY OF THE CONTEMPORARY INDIAN SOCIETY WITH SPECIAL REFERENCE TO THE SHORT STORIES OF UDAY PRAKASH

Minor Research Project
submitted to the
University Grant Commission

BY

Dr.P.J.SIVAKUMAR
(ASSOCIATE PROFESSOR, Retd)

DEPARTMENT OF HINDI
UNIVERSITY COLLEGE
THIRUVANANTHAPURAM
2015

ACKNOWLEDGEMENT

I am thankful to all those who have inspired and helped me in completing this project work. It is my duty to acknowledge my indebtedness to UGC for providing financial assistance for this Minor Research Project as per UGC approval Letter No.MRP (H) 1355/10-11/KLKE029/UGC-SWRO dated 22.12.10. I extend my sincere gratitude to Dr. S. Thankamani Amma (Former Professor & Head, Hindi Department, University of Kerala), Dr. N.Mohanan (Former Professor & Head, Department of Hindi, CUSAT) for their co-operation and encouragement during the course of my Project work. I also take this opportunity to express my thanks to the office staff, project section, University College, Thiruvananthapuram for their whole hearted co-operation. I also thank each and everyone who have supported me to complete this Minor Research Project.

Dr. P.J.Sivakumar
Associate Professor (Rtd)
Department of Hindi
University College
Thiruvananthapuram

DECLARATION

I hereby declare that this Minor Research Project Work '**A STUDY OF THE CONTEMPORARY INDIAN SOCIETY WITH SPECIAL REFERENCE TO THE SHORT STORIES OF UDAY PRAKASH'** has not previously formed the basis for the award of any Degree, Diploma, Associateship, Fellowship or other similar title or recognition.

Thiruvananthapuram

Date: 27.11.2015

Dr. P.J.Sivakumar

Associate Professor (Rtd)
Department of Hindi
University College
Thiruvananthapuram

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

अध्याय - 1 1 - 22

भारतीय समाज एवं समकालीन परिस्थितियाँ

1.1. समकालीन भारतीय समाज : एक परिचय

1.1.1. समाज की प्रकृति

1.1.2. सामाजिक स्थिति में परिवर्तन

1.1.2.1. आर्थिक विकास

1.1.2.2. शिक्षा का विकास

1.1.2.3. परिवार के स्वरूप में परिवर्तन

1.1.3. नारी की स्थिति में परिवर्तन

1.1.4. असन्तोष, आक्रोश, हिंसा का प्रतिफलन

1.1.5. भूमण्डलीकरण, उपनिवेशवाद एवं उपभोक्तावाद

अध्याय -2 23 - 40

हिंदी कहानी: आधुनिक से समकालीन तक

2.1. प्रेमचंद युग

2.2. प्रसाद युग

2.3. नई कहानी

2.4. अकहानी

2.5. सचेतन कहानी

2.6. समांतर कहानी

2.7. समकालीन कहानी

अध्याय - 3 41 - 61

उदयप्रकाश : व्यक्तित्व एवं साहित्य सृजन

3.1 व्यक्तित्व

3.1.1 जन्म और परिवार

3.1.2 शिक्षा

3.1.3 नौकरी

3.1.4 वैवाहिक जीवन

3.1.5 साहित्यिक प्रेरणा

3.2 साहित्य रचना

3.2.1 कवि उदय प्रकाश

3.2.2 कहानीकार उदय प्रकाश

3.2.3 निबन्ध, आलोचना एवं साक्षात्कारों का संकलन

3.2.4 उपन्यास

3.2.5 अनुवाद

3.2.6 फिल्म-टीवी

3.2.7 अन्य भाषाओं में अनूदित रचनाएँ

3.2.8 पुरस्कार

3.2.9 यात्राएँ

अध्याय - 4 62 - 73

उदय प्रकाश की कहानियों के पात्र

अध्याय - 5 74 - 100

उदय प्रकाश की कहानियों में समकालीन सामाजिक जीवन का चित्रण

5.1 तिरिछ

5.2 पॉल गोमरा का स्कूटर

5.3 वारन होस्टिंग्स का सांड

5.4 मैंगोसिल

5.5 ....और अंत में प्रार्थना

5.6 मोहनदास

5.7 टेपचु

5.8 भाई का सत्याग्रह

5.9 थर्ड डिर्गी

5.10 छप्पन तोले का करधन

5.11 मठाधीश

5.12 रुक्कु

5.13 पीली छतरी वाली लडकी

5.14 आचार्य का कुत्ता

उपसंहार 101 - 105

संदर्भ ग्रंथसूची 106 - 108

प्राक्कथन

मनुष्य की कहानी कहने और सुनने की प्रवृत्ति बहुत ही पुरानी है। मानव जाति के प्रादुर्भाव से विभिन्न युगों में यह प्रवृत्ति विद्यमान रही है। पौराणिक कथाओं, पशु-पक्षियों की कथाओं, लोक कथाओं और जातक कथावों से गुज़रकर आज उसने मानव मन और जीवन की बारीकियों की कहानी सुनाने की क्षमता हासिल की है।

भारतीय साहित्य में ही नहीं विश्व साहित्य के भी कहानी सबसे दिलचस्प एवं श्रेष्ठ विधा मानी जाती है। मानव मन की चिन्तन शक्ति की उपज के रूप में इस विधा का महत्व निर्विवाद है। व्यक्ति की चेतना, विवेक और विकास में कहानी का योगदान सर्वोपरि है। देश-काल की सीमाओं को लाँघकर मानव का चिन्तन और मनन उसकी संस्कृति की जडों को मज़बूज कर देता है। इस कार्य में कहानी की भूमिका महत्वपूर्ण है। समकालीन युग में कहानी विधा ने अपने वस्तु एवं शिल्प में काफी प्रगति प्राप्त की है।

इस प्रगति में योग देनेवाले कहानीकारों की सूची बहुत लंबी है। फिर भी समकालीन समाज की धडकों को सही रूप से पहचान कर उन्हें अपनी कहानियों के माध्यम से अभिव्यक्त करने में उदय प्रकाश को बडी सफलता मिली है। यही कारण है कि अपनी परियोजना के लिए उनकी कहानियों को चुन लिया गया। परियोजना का विषय है "समकालीन समाज का अध्ययनः उदय प्रकाश की कहानियों के विशेष संदर्भ में"।

प्रस्तुत प्रबंध को छः अध्यायों में विभाजित किया गया है। पहले अध्याय में भारतीय समाज का परिचय देकर उसके समकालीन समाज के स्वरूप को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। दूसरे अध्याय में हिन्दी कहानी की विकास यात्रा का परिचय देकर समकालीन कहानियों एवं कहानीकारों में उदय प्रकाश की भूमिका को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। तीसरे अध्याय में कहानीकार उदय प्रकाश के व्यक्तित्व और साहित्य सृजन पर प्रकाश डाला गया है। चौथे अध्याय में उदय प्रकाश की कहानियों में चित्रित पात्रों का परिचय दिया गया है। पाँचवें अध्याय में उदय प्रकाश की कहानियों में चित्रित समकालीन सामाजिक जीवन की समस्याओं एवं स्थितियों पर प्रकाश डालने का परिश्रम किया गया है।

अंतिम अध्याय उपसंहार है जिसमें उपर्युक्त अध्ययन से प्राप्त विचारों एवं निष्कर्षों को प्रस्तुत किया गया है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी) से प्राप्त अनुदान के द्वारा ही यह प्रबंध मैं ने तैयार किया है। इस प्रबंध की सामग्री संकलन में विभिन्न स्रोतों से मुझे सहायता मिली है। उन लेखकों और आलोचकों के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ जिनकी रचनाओं एवं विचारों से अपने प्रबंध को तैयार करने में मुझे सहायता मिली थी। इस अवसर पर प्रो. डी.तंकप्पन नायर (भूतपूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, बिषप्मूर कॉलेज, मावेलिक्करा), डॉ. एस. तंकमणि अम्मा (भूतपूर्व प्रोफसर एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, केरल विस्व विद्यालय) आदि के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ जिनसे अपने इस कार्य में मार्ग दर्शन एवं सहयोग

मिला। सामग्री संकलन में केरल विश्वविद्यालय के पुस्तकालय, यूनिवर्सिटी कॉलेज हिन्दी विभाग के पुस्तकालय, हिन्दी विभाग कोचिन विश्वविद्यालय (CUSAT) के पुस्तकालय आदि का भी मैंने लाभ उठाया है। सभी पुस्तकालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति मैं धन्यवाद प्रकट करता हूँ। इस प्रबन्ध के प्रारंभ से लेकर प्रबंध की तैयारी तक परिवारवालों से पूरा सहयोग और समर्थन मिला। उनके प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। अपने मित्रों और हितौषियों के प्रति भी धन्यवाद अदा करता हूँ।

अंत में इस प्रबंध का सुचारु रूप से टंकण कार्य करनेवाली श्रीमती बेबी और श्रीमती सुजाता को भी धन्यवाद देना मेरा कर्तव्य है।

तिरुवनन्तपुरम

दिनांक :27.11.2015

डॉ.पी.जे.शिवकुमार

अध्याय - एक

भारतीय समाज एवं समकालीन परिस्थितियाँ

अध्याय - 1

भारतीय समाज एवं समकालीन परिस्थितियाँ

1.1. समकालीन भारतीय समाज : एक परिचय

समाज शब्द अंग्रेज़ी शब्द 'सोसइटि' के पर्यायवाची रूप में प्रचलित है। समाज शब्द दल, समूह, संघ आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है। इस दृष्टि से एक ही स्थान में रहने वाले लोगों के विभिन्न समूह को समाज कहलाता है। विभिन्न विद्वानों ने समाज की अलग अलग परिभाषायें दी हैं। गिडिंग्स ने समाज को एक संगठन मानते हुए कहा है - "समाज स्वयं एक संघ है, संगठन है जिससे समस्त व्यक्ति आपस में एक दूसरे से संबंधित रहते है।" जाति, वर्ग, पेशा आदि के आधार पर समाज में विभिन्न जन समूह विद्यमान हैं। समाज सामाजिक संबंधों की सुदृढ व्यवस्था है। मानव जीवन के प्रारंभ में पारस्परिक सहयोग का पूर्ण रूप से अभाव था। तब समाज जैसी कोई व्यवस्था ही नहीं थी। गुफाओं और जंगलों में रहनेवाले मनुष्य अनियंत्रित और स्वेच्छारी जीवन बिताते थे। धीरे धीरे ये एक दूसरे से मिलने लगे और स्वेच्छा से विभिन्न जनसमूहों द्वारा आपसी संपर्क स्थापित करके सामाजिक जीवन की प्रक्रिया शुरू हुई। इस प्रकार सामाजिक जीवन की प्रक्रिया के प्रारंभ होते ही मानव में प्रगति प्रारंभ हुई। सामाजिक जीवन की प्रक्रिया प्रारंभ करने में भाषा का स्थान सर्वोपरि है। क्योंकि भाषा के

माध्यम से ही मनुष्य अपने विचारों और भावनाओं को आपस में व्यक्त करता है।

समाज एक व्यवस्था है जो सामाजिक संबंधों पर आधारित है। इसमें समानता, असमानता और भिन्नता का होना स्वाभाविक है। सामाजिक भावना केवल प्राणियों में ही विद्यमान रहती है। समाज के विकास के लिए समानता और भिन्नता दोनों आवश्यक है। स्त्री और पुरुष के सहयोग से ही परिवार का निर्माण होता है। दोनों मनुष्य हैं यही समानता है, लेकिन लैंगिक दृष्टि से भिन्नता भी है। समाज के बिना व्यक्ति का जीवन अपूर्ण है। समाज से अलग होकर, अकेला रहकर व्यक्ति की कोई उन्नति संभव नहीं है। अपने विकास के लिए आवश्यक सारी परिस्थितियाँ समाज में ही उपलब्ध होता है। संक्षेप में समाज से अलग व्यक्ति का कोई महत्व नहीं है।

मनुष्य समाज व्यक्तियों के पारस्परिक संबंध, एकता और विश्वास पर आधारित है। वह अपनी भाषा, बुद्धि और मेहनत के आधार पर अपने समाज की उन्नति और विकास केलिए प्रयत्नशील है।

समाज और सामाजिक संबंधों का अध्ययन समाज शास्त्र के अंतर्गत आता है। समाज का निर्माण व्यक्तियों की क्रियाओं, पारस्परिक संबंधों और आपसी व्यवहारों से होता है। इस प्रकार समाज सामाजिक

संबंधों की एक जटिल एवं अमूर्त व्यवस्था है। समाज का संबंध व्यक्तियों के बीच पाये जानेवाले संबंधों से है। संसार में हर प्रकार का समाज देखने को मिलता है जिनकी अलग अलग विशेषताएँ भी होती हैं। ये विशेषतायें समाज को आकृति एवं स्वरूप प्रदान करती हैं।

1.1.1.समाज की प्रकृति :

अन्य जीवधारियों की तुलना में मनुष्य की एक मात्र श्रेष्ठता यह है कि उसकी संस्कृति से प्रभावित संबंधों की व्यवस्था से ही मानव समाज की उत्पत्ति हुई है। जीवन को सही रूप देने की इच्छा तथा परस्पर सम्पर्क से प्रभावित संबंधों की व्यवस्था से ही समाज का निर्माण हो सका है। इसी व्यवस्था को हम समाज की संज्ञा देते हैं। समाज की प्रकृति के अन्तर्गत जाति तथा वर्ग का भी प्रमुख स्थान है। जाति व्यवस्था जन्म से व्यक्ति को एक विशेष सामाजिक स्थिति प्रदान करती है जिसमें आजीवन कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता।

वर्ण व्यवस्था वैदिक काल की महान देन थी। कोई भी मनुष्य बिना किसी सहारा लिए काम नहीं कर सकता। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के रूप में मानव जाति का विभाजन हुआ। आर्यों ने समाज की व्यवस्था को दृढ़ता प्रदान करने केलिए वर्ण व्यवस्था को अपनाया। चातुर्वर्ण्यम के आधार पर वर्ण व्यवस्था व्यक्तियों के गुण एवं कर्म के अनुसार है, जन्म के आधार पर नहीं।

धीरे धीरे वर्ण व्यवस्था से निर्धारित पेशों पर निर्भर रहना कठिन हो गया। धर्म निरपेक्ष शिक्षा का प्रभाव, समाज सुधार की चेतना, समाज सुधारकों का प्रयास, स्वाधीनता आंदोलन आदि कारणों से जाति व्यवस्था टूटने लगी। लेकिन बीसवीं सदी में एक नई प्रवृत्ति का प्रारंभ हुआ जिससे उपजातियाँ मिटने लगीं तथा बडी जातियाँ संगठित होने लगीं। जातिगत भावना के आधार पर संगठनों का निर्माण इस तथ्य की पुष्टि करता है कि जातिगत भावना का मिटना सरल नहीं है बल्कि यह अधिक से अधिक प्रभावशाली होती जा रही है। जो भी हो जाति, वर्ग, परिवार, समुदाय सभी समाज की इकाइयाँ हैं।

धर्म एक व्यवस्था है जिसके आधार पर जीवन समुचित ढंग से व्यवस्थित होकर चलता है। धर्म ही जीवन को आचार-विचार, नियम, सत्कर्म, सद्‌भाव, प्रेम आदि से संबद्ध करता है। जियो और जीने दो की भावना को लेकर जीवन गतिशील रहे, यही उसकी आधारशिला होती है। संक्षेप में धर्म का समाज से बहुत गहरा संबंध है। धर्म और समाज, समाज और व्यक्ति, समाज और संस्कृति सभी का एक दूसरे के साथ अन्योन्याश्रय संबंध है। समाज केलिए ही धर्म है। अच्छाई का विकास हो और बुराई का संहार हो, यही शिक्षा धर्म समाज को देता है। धर्म से निराशा में आशा का उदय होता है, मानसिक शांति प्राप्त होती है। समाज को धर्म अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। यह

सत्य है कि धर्म में जब अविश्वास और कुरीतियों का ज्यादा प्रभाव पडता है तो उसका रूप विकृत हो जाता है। जब धर्म में कर्मकाण्ड, अंधविश्वास और रूढियों का समावेश हो जाता है, तब वह समाज केलिए हानिकारक हो जाता है। ऐसी स्थिति में धर्म के पुनसंस्कार की आवश्यकता होती है। वास्तव में धर्म सभ्यता, संस्कृति, समाज और विश्व को उच्च शिखर पर ले जानेवाली एक सशक्त व्यवस्था है।

लेकिन महान नेताओं की उदार नीति और धर्म निरपेक्ष दृष्टिकोण के कारण जाति व्यवस्था में परिवर्तन आया। जाति, वर्ग, परिवार, समुदाय सभी समाज की इकाइयाँ हैं। आधुनिक युग में आर्थिक स्थिति के आधार पर समाज का विभाजन हुआ - उच्च वर्ग, मध्य वर्ग और निम्न वर्ग। फिर मध्य वर्ग के दो और भेद हो गए, उच्च मध्य वर्ग और निम्न मध्य वर्ग। इस प्रकार मध्य वर्ग सबसे प्रबल वर्ग साबित हुआ। समाज की आर्थिक स्थिति के आधार का मापदंड, समाज की उत्पादनक्षमता और वितरण की प्रणाली पर स्थित है। कार्लमार्क्स की विचारधारा ही इसका आधार है।

सामाजिक उन्नति में संस्कृति एवं साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण है। समाज की सामूहिक प्रगति में सहायक कार्य संस्कृति के अंदर्गत आते हैं। संस्कृति द्वारा सामाजिक, भौतिक और आध्यात्मिक विकास होता है। संस्कृति हमारे श्रेष्ठ विचार और आचरण का प्रतीक है। जिस

प्रकार व्यक्ति की उन्नति का आधार ज्ञान है उसी प्रकार व्यक्तित्व का आधार संस्कृति है। उच्च संस्कृति का व्यक्ति संस्कारशील बनता है और सुसंस्कृत व्यक्तियों से समाज प्रगति की ओर अग्रसर होता है। सुसंस्कृत व्यक्ति में सहिष्णुता और विनम्रता की शक्ति विद्यमान हैं।

व्यक्ति के सुसंकृत बनने में ज्ञान का महत्व है और ज्ञान केलिए उचित शिक्षा आवश्यक है। मनुष्य और पशु में सबसे बडा अंतर भी शिक्षा है। शिक्षा से ज्ञान की प्राप्ति होती है और मनुष्य की बुद्धि का विकास होता है और वह प्रतिभाशाली बनता है। शिक्षित व्यक्तियों से समाज प्रगति प्राप्त करता है। शिक्षा प्राप्त करने केलिए आयु की कोई सीमा नहीं है। आत्मविस्तार, जीवन-उन्नति, आध्यात्मिक और भौतिक उन्नति का मूल आधार शिक्षा है। शिक्षा से व्यक्ति में विनम्रता का गुण बढ़ता है। विनम्रता शिक्षित व्यक्ति की पहचान है- "विद्या विनयेन अश्नुते"।

साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित संबन्ध है। साहित्य में समाज का ही चित्रण होता है। साहित्यकार भी सामाजिक प्राणी है। वह अपने तत्कालीन समाज और सामाजिक परिस्थितियों से जो कुछ ग्रहण करता है, अनुभव करता है, उसे स्वाभाविक रूप से अपने साहित्य में अभिव्यक्त करता है। साहित्य शब्द के अर्थ के संबंध में डॉ.गुलाब राय ने कहा है - "साहित्य का अर्थ, हितेन सहः सहितम्

लगाते हुए हम कह सकते हैं साहित्य वही है, जिससे मानव हित का सम्पादन हो।"[2] यह अंग्रेज़ी शब्द लिटरेचर का पर्यायवाची है।

समाज के सर्वतोमुखी विकास में साहित्य की अव्वल भूमिका है। सामाजिक जीव होने के कारण साहित्यकार का समाज से गहरा संबंध है। संवेदनशील होने के कारण वह समाज की परिस्थितियों से, समस्याओं से, प्रभावित होता है और अपनी रचनाओं मे उन्हें व्यक्त करता है। साहित्य का मुख्य संबंध मानव की संवेदना से हैं। संवेदना के बिना साहित्य का जन्म नहीं होता। समाज से जुडकर रहनेवाला साहित्यकार ही अपनी रचनाओं में समाज का यथार्थ चित्रण कर पायेगा। भावों को जीवित रखने के साथ ही साथ साहित्य हमारे व्यक्तित्व को भी परिमार्जित करता है। साहित्य हमारे जीवन को सुधार देता है और आदर्श जीवन चलाने के लिए प्रेरणा देता है। अपने जीवन में वह जो कुछ भी देखता है, सुनता है और अनुभव करता है, उन सब की सम्मिलित अभिव्यक्ति अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करता है। देश के सामाजिक नैतिक और धार्मिक परिस्थिति में परिवर्तन होता है तो साहित्य में भी उसका प्रभाव पडता है। इस प्रकार समाज की हर धडकन साहित्य में हम अनुभव कर सकते हैं।

शब्द और अर्थ के सहभाव से रचनाकार जिसका सृजन करता है, वही साहित्य है। साहित्य में शब्दों द्वारा अर्थ की अभिव्यक्ति होती है।

साहित्य के स्वरूप अलग अलग विधाओं में सृजित होते हैं जैसे कहानी, उपन्यास, नाटक, पद्य, गद्य आदि। सभी साहित्य के अंतर्गत ही आते हैं। मानव मन और मस्तिष्क में उठनेवाले भावों और विचारों के शब्द-चित्र ही साहित्य का रूप धारण करते हैं। सामाजिक भावों और विचारों की प्रतिछाया होने के कारण साहित्य समाज का प्रतिबिंब है। मनुष्य द्वारा साहित्य से ही संस्कृति की रक्षा हो सकती है। लेकिन साहित्य जगत में स्थान उन्ही रचनाओं को मिलना चाहिए जो समाज केलिए उपयोगी हाते हैं। उत्कृष्ट रचनाओं के द्वारा ही समाज की उन्नति और मानव कल्याण होता है। कल्याण की रचनाओं के द्वारा ही एक साहित्यकार साहित्य के क्षेत्र में अपना स्थान निर्धारित करता है।

निरंतरता ही साहित्य का गुण है। सदैव चलते रहनेवाले ज्ञान का क्रम शाश्वत है, चिरंतन है। प्रत्येक देश का साहित्य उस देश के मानव मन के भावों, विचारों और अनुभूतियों का चित्र होता है। साहित्य की विवेचना विभिन्न युगों में विभिन्न रूपों में की गई है। साहित्य जीवन की ही आत्म कहानी है। साहित्य के द्वारा ही मानव अपने मनोवृत्तियों को चित्रित करता आ रहा है। इसलिए साहित्य के स्वरूप को एक देश और एक काल में बाँधा नहीं जा सकता। वह सार्वदेशिक और सर्वकालिक है। मानव मन की भावनायें समस्त संसार में समान है। दुःख में दुःखी और सुख में सुखी रहने की प्रवृत्ति

विश्व व्यापी है। अतः विश्व स्तर पर साहित्य का स्वरूप भी समान है।

मनुष्य के मन की बात करने का माध्यम भिन्न होने पर भी उसके भाव और आधार एक ही होता है। किसी ने अपने मन में अभिव्यक्त भावों और विचारों को साहित्य रूप में प्रस्तुत किया तो किसी ने उन्हें चित्र रूप में प्रकट किया। रूप भले ही भिन्न हो पर भावना तो एक ही है, आधार एक ही है। साहित्य का क्रम कभी रुकता नहीं, गतिरोध होने पर भी उसकी धारा फिर प्रवाहित होने लगती है। युग की विशेषतायें कुछ समय के लिए प्रवाह में बाधा डाल सकती हैं परंतु उसके शाश्वत स्वरूप को मिटा नहीं सकती। जब तक किसी भी देश का साहित्य जीवित है, तब तक उस देश का अस्तित्व भी होगा, उस देश को कोई मिटा नहीं सकता।

विश्व साहित्य की कृतियों का आज भी वही मूल्य है जो उन रचनाओं के समय में था। शेक्स्पीयर, बर्णाड शॉ, शेल्ली, कीट्स, बायरन, कबीर, सूर, तुलसी, मीरा आदि की रचनायें आज भी साहित्य की अमर रचनायें हैं। इसका यही कारण है कि सब देशों और सब कालों में साहित्य सृजन का केन्द्र मानव रहा है। उसकी भावना का क्षेत्र एक है। इसलिए शेक्स्पीयर केवल पश्चिम की और कालिदास केवल पूर्व की विभूतियाँ नहीं बने, वे सम्पूर्ण विश्व की विभूतियाँ हैं। साम्प्रदायिकता, भेद-भाव, राजनैतिक परिस्थिति, संकुचित मनोवृत्तियाँ

आदि के लिए साहित्य में कोई स्थान नहीं है। साहित्य का स्वरूप निरपेक्ष है, समान है और सब के लिए हैं। सर्व जन सुखाय और सर्व जन हिताय पर आधारित साहित्य जन-जन का है, प्रत्येक देश का है।

सामाजिक संबंधों को साहित्य और भी दृढ करता है क्योंकि उसमें मनुष्य का हित। सम्मिलित है। साहित्य की भाषा साधारण भाषा की अपेक्षा प्रभावशाली होती है। साहित्य का उद्धेश्य, सिर्फ मनुष्य को संतुष्ट करना या आनंद प्रदान करना नहीं है। वह मनुष्य जीवन को अधिक सुखी और सुन्दर बनाने की कोशिश करता है। साहित्य के सहारे मनुष्य जीवन की कठिनाई को, दुख को क्षण भर केलिए भूल जाता है। वह वास्तविक संसार को छोडकर भावना और कल्पना के लोक में विचरण करने लगता है। साहित्य मानव समाज की अनेक उपलब्धियों में से एक है। इससे मानव में शील, क्षमा, करुणा, सौहार्द, शांति, अहिंसा, अस्तित्व आदि गुणों की सृष्टि होती है, रक्षा होती है। साहित्य मनुष्यमात्र के लिए हैं जो उसे अधंकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। साहित्य की सार्थकता जीवन से अलग रहने में नहीं है। व्यक्ति, समाज और साहित्य एक माला की तीन मणियाँ हैं। व्यक्ति, समाज और साहित्य एक सूत्र में गूँथे हुए हैं। व्यक्ति से समाज बनता है, समाज में ही साहित्यकार रहता है और अपनी रचनाओं में तत्कालीन परिस्थितियों का चित्रण करता है।

1.1.2. सामाजिक स्थिति में परिवर्तन :

भारत में भी स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ ही इतिहास भी बदला जिससे सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तन हुए। स्वतन्त्रता के पश्चात् प्रायः सभी क्षेत्रों के विकास पर जोर दिया गया और यह स्वाभाविक भी था क्योंकि बिना विकास अथवा प्रगति के आज़ादी के कोई मायने नहीं हैं। किन्तु स्वतन्त्रता के पूर्व ही आधुनिक भारत के संभावित विकास के लिए आवश्यक स्थितियों एवं सोच की पृष्ठभूमि तैयार होने लगी थी। अतः उन परिस्थितियों पर पुनः एक दृष्टि डालने की आवश्यकता है।

अंग्रेज़ों के आगमन से पूर्व भारतीय समाज-व्यवस्था गाँव पर आधारित थी जो वर्ण एवं वर्ग की श्रृंघलाओं में जकड़ा हुआ था। अंग्रेज़ों के आगमन के साथ भारत में उस नवीन दृष्टि का प्रवेश हुआ जिसमें नवजागरण, औद्योगिकीकरण, वैज्ञानिक अन्वेषण, जागरूकता व नवीनता का समावेश था। यूरोपीय क्रान्ति का प्रभाव भारतीयों पर भी पड़ा। यहाँ दुनिया की चीज़ों को देखने, परखने की पद्धति बदली, विचारक्रम बदला और शीघ्र ही धर्म तथा धार्मिक नैतिकता एवं पारलौकिकता के स्थान पर समाज, चारों ओर का जीवन, देश की भौतिक आवश्यकताएँ आदि बातें शिक्षितों का ध्यान आकृष्ट करने लगी। निःसंदेह यह शिक्षित समुदाय नवोदित मध्यम वर्ग था और इसी

पर समाज के नव निर्माण का उत्तरदायित्व था।

पाश्चात्य संस्कृति बुद्धिबल एवं भौतिक साधनों की उन्नति पर विश्वास करती थी और भारतीय संस्कृति आत्मिक दृढ़ता और आध्यात्मिक चेतना से समन्वित थी। इन दोनों संस्कृतियों की टराहट एवं समन्वय ने भारतीय समाज की विचारधारा में परिवर्तन उपस्थित किए। इस प्रकार एक ओर नए वातावरण एवं चिन्तन की पृष्ठभूमि तैयार हो चुकी थी और दूसरी ओर स्वतन्त्रता के पश्चात् विभिन्न क्षेत्रों में विकास को बढ़ावा दिया जा रहा था। यूँ तो विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया निरन्तर गतिमान रहती है।

1.1.2.1. आर्थिक विकास

सस्ती मज़दूरी ने अंग्रेज़ों को भारत में कारखाने खोलने के लिए प्रेरित किया और यहीं से औद्योगिक युग का आरम्भ हुआ। कालान्तर में वैज्ञानिक उन्नति ने इनका प्रसार किया। औद्योगिकीकरण ने व्यक्ति पर सीधा प्रभाव डाला। इससे एक ओर अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हुई तो दूसरी ओर सामाजिक क्षेत्र में इससे कई परिवर्तन उपस्थित हुए। मिल मालिक व मज़दूरों का संघर्ष, नगरों का विकास एवं उनमें पनपता अलगाव, अजनबीपन, हिंसा, आक्रोश की भावना, मध्यवर्गीय जीवन संघर्ष, एकाकी परिवार, बेकारी, गाँवों से पलायन, परिवर्तित नैतिकता आदि औद्योगिकीकरण के ही परिणाम हैं।

पूँजीवादी एवं भौतिकतावादी संस्कृति का विकास भी औद्योगिकीकरण की ही देन है। भौतिक उपलब्धियों ने मनुष्य का महत्व कम कर दिया है, इसीलिए तर्क और बुद्धि का सहारा लेकर केवल व्यक्ति के महत्व को रेखांकित किया जा रहा है। भौतिकवादी संस्कृति का परिणाम अस्पष्ट व्यवहार, सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन व काम के प्रसार के रूप में भी देखा जा सकता है।

1.1.2.2. शिक्षा का विकास

शिक्षा का विकास व प्रसार आजादी के बाद सबसे अधिक हुआ है। स्त्री शिक्षा की ओर भी ध्यान दिया गया है जिससे नारी स्वातन्त्र्य की भावना विकसित हुई है। शिक्षा के प्रसार व अन्य वैज्ञानिक अनुसंधानों से पाश्चात्यीकरण का भी विकास हुआ है। पाश्चात्यीकरण से अर्थ पश्चिम (अथवा विकसित) राष्ट्रों की सोच और संस्कृति से है। इस संस्कृति ने स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया जिससे युवा वर्ग अधिक प्रभावित है।

स्वतन्त्रता के पश्चात् उपर्युक्त क्षेत्रों में विकास स्पष्टतः दिखलाई पड़ता है। इन क्षेत्रों में हुए विकास ने सामाजिक परिवर्तनों को प्रभावित किया जिससे साहित्य के कलेवर में परिवर्तन आना स्वाभाविक था।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् इतिहास भी बदला। डॉ. रामदरश मिश्र के अनुसार स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद का साहित्य दो दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण है - "एक तो सने हर विधा में जिये हुए जीवन सत्य पर बल दिया, दूसरे देश के उपेक्षित अंचलों की ओर दृष्टि गई।" इस प्रकार सामाजिक, आर्थिक परिवर्तन नए शिल्प के माध्यम से साहित्य में उभर कर सामने आए।

1.1.2.3. परिवार के स्वरूप में परिवर्तन

विकास की प्रक्रिया में सामाजिक क्षेत्र में परिवारों के स्वरूप में विशेष प्रवर्तन उपस्थित हुए हैं। परिवार एक सामाजिक संस्था है जिसका आधार विशेष सामाजिक, आर्थिक तथा भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं। इन परिस्थितियों में परिवर्तन के साथ ही विघटन आरम्भ हो जाता है। यही बात परिवारों पर भी लागू होती है। कृषि, ग्रामीण जीवन, विवाह संस्था, जाति-प्रथा, यातायात तथा संचार के साधनों के नितान्त अभाव, आदि कुछ ऐसी दशाएँ थीं जिनके कारण भारत में संयुक्त परिवार प्रणाली की उत्पत्ति हुई। इन दशाओं में परिवर्तन से इस संस्था में विघटन आना स्वाभाविक था। प्रसिद्ध विद्वान बोटोमोर के अनुसार "संयुक्त परिवारों का विघटन केवल औद्योगिकीकरण से सम्बन्धित विभिन्न दशाओं का ही परिणाम नहीं है बल्कि इसका प्रमुख कारण यह

है कि संयुक्त परिवार आर्थिक विकास की आवश्यकताओं को पूरा करने में असफल सिद्ध हुए हैं।"

प्रारम्भिक युग में संयुक्त परिवार विघटन का लेखकों ने समर्थन नहीं किया है। इसका समर्थन प्रेमचन्द के पश्चात् आरम्भ होता है। नवीन औद्योगिकीकरण तथा वैज्ञानिक प्रगति ने आर्थिक व्यवस्था पर काफी प्रभाव डाला है। औद्योगिक उन्नति ने कृषि व्यवस्था पर प्रभाव डाला। अतः व्यक्ति तथा परिवार के सामने नई आर्थिक समस्याएँ एवं सुविधाएँ आईं।

रुचि वैभिन्न को भी कतिपय लेखकों ने संयुक्त परिवार विघटन का प्रमुख आधार माना है। प्रत्येक प्राणी अपनी व्यक्तिगत चेतना का उदय होने पर एक कुटुम्ब में रहने के कारण अपने को प्रतिकूल परिस्थिति में देखता है। रुचि वैभिन्य से पारिवारिक झगड़े होते हैं जो विघटन का प्रमुख कारण बनता है। इसके अतिरिक्त नारी स्वातन्त्र्य की चेतना तथा आर्थिक स्वावलम्बन ने नारी में विद्रोह की भावना उत्पन्न की है जिससे वह एकाकी परिवार चाहने लगी है। छठे एवं सातवें दशक के लगभग सभी प्रमुख कथासाहित्य के नारी पात्र इसी संघर्ष से ग्रसित दिखलाई पड़ते हैं। संयुक्त परिवार का आधार अनुशासन था, किन्तु अत्यधिक कठोर अनुशासन का दुष्परिणाम विघटन के रूप में निकला।

इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन, भौतिकवादी संस्कृति तथा व्यक्तिवादिता, शिक्षा एवं अर्थ के परिवर्तित स्वरूप के कारण नवीन पारिवारिक ढांचे का विकास हुआ। संयुक्त परिवार विघटन के साथ ही परिवार में सत्ता का प्रश्न समाप्त हो गया। व्यावसायिक गतिशीलता ने एकाकी परिवारों की आवश्यकता पर बल दिया है।

आधुनिक समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं, जीवन के सभी मापदण्ड बदल चुके हैं। अत्यधिक धन अर्जित करने की लालसा ने मूल्यों और आदर्शों के प्रति मोह को समाप्त कर दिया है। मूल्यों की उपयोगिता तर्क पर आधारित होने लगी है। औद्योगिकीकरण एवं नगरों के विकास, शिक्षा के प्रसार व आर्थिक ढाँचे ने वैवाहिक मूल्यों पर भी प्रभाव डाला है। आज विवाह को परम्परा या सामाजिक बन्धन के स्थान पर, व्यक्तिगत आवश्यकता अथवा दैहिक योग के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है। आज पति पत्नी एक दूसरे के व्यक्तित्व को बाँधकर नहीं रखना चाहते।

आज की परिवर्तित परिस्थितियों में समाज के मूल्य और आदर्श समाप्त होते जा रहे हैं। मूल्यों की उपयोगिता तर्क पर आधारित होने लगी है। तलाक की मान्यता के साथ ही प्रेम-विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, सिविल मैरिज आदि के मूल्य स्थापित हो रहे हैं। विवाह को व्यक्तिगत मसला समझा जाने लगा है। पूँजीपति वर्ग में तो विवाह की भी उपयोगिता के आधार पर

पहले देखा जाता है, मानवीयता के आधार पर बाद में। युवा वर्ग में तो विवाह के प्रति उपेक्षा बढ़ती जा रही है। विवाह के समानांतर ही वह कोई अन्य व्यवस्था चाहने लगा है। इसलिए वह वैवाहिक रीति-रिवाज़ों को भी नहीं मानता।

1.1.2.4. मध्य वर्ग की नैतिक मान्यताओं में परिवर्तन

परिवर्तित वैवाहिक मूल्यों ने मध्यवर्ग की नैतिक मान्यताओं को प्रभावित किया। वैज्ञानिक जीव दृष्टि ने मानवीय सम्बन्धों को यथार्थ धरातल दिया है। भावना का स्थान तर्क ने ले लिया है। परम्परागत सामाजिक मूल्यों तथा संस्कारों को नकारते हुए भारतीय जीवन में आधुनिकीकरण के परिवर्तित परिवेश से मानवीय संबंधों के विघटित स्वरूप को चित्रित किया गया है। श्लील और अश्लील जैसी मान्यता को नैतिकता के घेरे से बाहर कर दिया गया है। विवाह पूर्व एवं विवाह के बाद अन्य पुरुष से शारीरिक संबंध सातवें व उसके बाद के दशकों के कथा साहित्य में अधिक उभरे हैं तथा कहीं-कहीं लेखकों ने अतिवादी दृष्टिकोण अपनाया है, यथार्थ के नाम पर सैक्स और नग्नता को उभारा है।

1.1.3. नारी की स्थिति में परिवर्तन

आधुनिक काल के सभी क्षेत्रों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं। अनेक धर्म-सुधार आन्दोलनों ने कुप्रथाओं का उग्र रूप से विरोध

किया। समाज में स्त्रियों की स्वाधीनता और शिक्षा का प्रश्न उठाया जाने लगा। शिक्षा के परिणामस्वरूप स्त्री घर के सीमित दायरे से बाहर निकल आई। केवल विवाह ही उसके जीवन का चरम लक्ष्य नहीं रह गया। वरन् विभिन्न व्यवसायों को अपनाकर वह अपने सुदृढ़ व्यक्तित्व का परिचय देने लगी। अपने अस्तित्व एवं व्यक्तित्व के प्रति आधुनिक नारी अधिक चिन्तित प्रतीत होती है। आज की शिक्षित पत्नी पति से गिड़गिड़ाकर क्षमा नहीं माँगती। सन्देह करने पर वह भी पति को चुनौती दे सकती है।

भारतीय संविधान ने नारी को समानाधिकार दिए हैं। वह अब दमघोंट वातावरण में निस्पन्द, गतिहीन जीवन जीने के लिए तैयार नहीं है। अब नारी पुरुष की सम्पत्ति मात्र न बनकर उसकी सहभागिनी होकर जीवन व्यतीत करना चाहती है।

विषम आर्थिक परिस्थितियों ने स्त्री को भी नौकरी के लिए विवश किया है। इसके अतिरिक्त नारी-शिक्षा तथा नारी स्वातन्त्र्य की भावना ने नारी को घर के बाहर निकलने के लिए उत्साहित किया। समाज ने स्त्री के आर्थिक स्वावलम्बन को मान्यता तो दी किन्तु इसके साथ ही उसकी मर्यादाओं पर प्रश्नचिह्न भी लग गए। इससे घर और बाहर दोनों क्षेत्रों में उसका संघर्ष बढ़ गया। पारिवारिक उत्तरदायित्व के साथ-साथ उसे बाहर के कार्य भी करना पड़ रहा है। आत्मनिर्भरता

यद्यपि स्वतन्त्र व्यक्तित्व का विकास करती है किन्तु कार्य की अधिकता के कारण परिवार में विशेषकर बच्चे उपेक्षित होने लगते हैं। इस सत्य एवं संघर्ष को साहित्यकार विशेष रूप से उभार रहे हैं। आधुनिक युग में पुरुष प्रगतिशील विचारों का समर्थक होते हुए भी संकीर्णता से मस्त है। वह नारी की स्वतन्त्रता स्वीकर तो करता है, किन्तु नारी के प्रति अविश्वास उसके मन में आज भी है। परिणामस्वरूप जहाँ एक ओर संबंधों में सुधार दिखायी पड़ता है तो दूसरी ओर कटुता भी बढ़ती जा रही है।

अपनी योग्यता एवं क्षमतानुसार प्रयत्न करने पर जब व्यक्ति को सफलता नहीं मिलती तो वह कुंठित हो जाता है। यह कुंठा प्रमुखतः यौन संबंधी असफलता, आर्थिक हीनता, राजनीतिक, प्रशासनिक व सामाजिक शोषण आदि को लेकर विश्लेषित की गई है। आज का मनुष्य स्वयं अपने प्रति ईमानदार नहीं है। वह दोहरी जिंदगी जीता है। यह दोहरापन ही व्यक्ति को मुखौटावादी बना देता है। एक ही व्यक्ति जो मद्यपान का विरोध करता है व स्त्री के सम्मान की दुहाई देता है, वही घर में शराब पीता है, स्त्री को पीटता है। एक ओर व्यक्ति उदारता और त्याग की बातें करता है, दूसरी ओर स्वार्थ और लालच को प्रश्रय देता है।

भौतिकवादी संस्कृति ने व्यक्ति के आचरण को प्रभावित किया है। अपनी भावनाओं पर आचरण डालना वह बखूबी सीख गया है। नगरों में यह

आचरण विशेष रूप से प्रसार पा रहा है। ग्रन्थिग्रस्त व्यक्ति घर तथा समाज में सामंजस्य नहीं कर पाता। इस अभाव में उसका व्यवहार कभी विद्रोही हो जाता है, कभी आक्रामक और कभी उच्छृंखल। उच्छृंखलता उसे विकृति की ओर ले जाती है। दृढ़ता के अभाव में व्यक्ति को उचित अनुचित का ज्ञान नहीं रहता। ऐसे चरित्र खंडित व्यक्तित्व की श्रेणी में आते हैं।

1.1.4. असन्तोष, आक्रोश, हिंसा का प्रतिफलन

विषम आर्थिक संघर्ष, आधुनिक शिक्षा, पाश्चात्य संस्कृति, राजनीतिक शोषण, बेरोज़गारी व मूल्यहीनता ने मध्यवर्ग पर काफी अधिक दबाव डाले हैं। नवीन चेतना एवं बौद्धिक उन्मेष ने प्राचीन मूल्यों पर प्रश्नचिह्न लगा दिए हैं। अन्तर्विरोधी मूल्यों ने व्यक्ति के जीवन को विभाजित कर दिया है। जीवन की विफलता, महत्वाकांक्षा तथा अहं पर पड़े आघात ने व्यक्ति में असन्तोष, आक्रोश एवं हिंसा का प्रतिफलन किया है। समाज की परम्परागत व्यवस्था से असंतोष व्यक्ति जब विद्रोह करने लगता है तो समाज में अपेक्षित परिवर्तन चाहता है। परिवर्तन न होने पर उसमें असंतुष्ट और आक्रोश की भावना आ जाती है। राष्ट्रीय एकता का नारा विशेषकर युवा वर्ग को खोखला प्रतीत होता है। युवा वर्ग में समाज के प्रति आक्रोश और विद्रोह अधिक है। दिशाहीन युवावर्ग में आत्म विश्वास की कमी है जिसके कारण वह

अधिक उत्तेजित दिखलाई पड़ता है। बेरोजगारी ने इस आक्रोश को और बढ़ाया ही है।

1.1.5. भूमण्डलीकरण, उपनिवेशवाद एवं उपभोक्तावाद

आज मानवीय संवेदना का निरन्तर ह्रास हो रहा है, पारिवारिक जीवन बिखरता चला जा रहा है और मनुष्य मशीनों का गुलाम बन चुका है। मशीनों पर लगातार काम करने से अनेक प्रकार की नई बीमारियाँ उत्पन्न हो गयी हैं। हमारे परम्परागत रीति-रिवाज, तीज-त्यौहार, खान-पान, वेश-भूषा आदि को उपनिवेशवादी शक्तियों ने पिछड़ा हुआ और दकियानूसी बताकर लगातार हम पर इन्हें त्यागने का दबाव डाला है और बाजार के माध्यम से अपनी संस्कति हम पर थोपना चाहते हैं। वैश्वीकरण द्वारा दिखाये गये सपने उदारीकरण और निजीकरण की आग में झुलस रहे हैं और इनके पुरोधा अपना उल्लू सीधा करने में जुटे हुए हैं।

ब्रिटेन, अमेरिका और यूरोपीय देशों ने शोषण के नये हथियार खोज निकाले हैं। ये देश स्वयं को सर्वशक्तिमान मानते हुए भूमण्डलीकरण, उदारीकरण और निजीकरण की आड़ में विकासशील और तीसरी दुनिया के गरीब देशों को अपना शिकार बना रहे हैं। वस्तुतः आज का समय आर्थिक साम्राज्यवाद का है।

आज के समय में 'नव-उपनिवेशवाद' साम्राज्यवाद और शायद इससे भी खतरनाक मंच का प्रतिनिधित्व करता है। 'नव-उपनिवेशवाद'

शब्द विकासशील देशों में विकसित देशों की भागीदारी के संदर्भ में उत्तर-उपनिववेशवादी आलोचकों द्वारा प्रयोग किया जाता है। इस अवधारणा का जन्म द्वितीय विश्वयुद्ध की अवधि के औपनिवेशक स्वतंत्रता आन्दोलन के बाद उनके पूर्व उपनिवेशों और निर्भरता का नियंत्रण बनाये रखने के लिए हुआ।

नव-उपनिवेशवाद वैश्वीकरण द्वारा फैलाये गये मायाजाल का वह सच्चा रूप है जिससे हमारा देश नयी गुलामी की ओर अग्रसर है। उपभोक्तावादी प्रवृत्ति ने आम आदमी का जीना दूभर कर दिया है और भारतीय संस्कृति और नैतिक मूल्यों का निरन्तर ह्रास हो रहा है। साहित्य का सीधा संबंध मानव समाज और उसकी गतिविधियों से है। समय-समय पर इस बात की पुष्टि भी होती रही है। हिन्दी साहित्य भी इससे अछूता नहीं है। वर्तमान में काशीनाथ सिंह, उदय प्रकाश, राजेश जोशी, अरुण कमल, मंगलेश डबराल आदि रचनाकार नव-औपनिवेशवादी प्रवृत्तियों से भारतीय जनता को सचेत करने में लगे हैं।

यदि उदय प्रकाश की रचनाओं को ध्यान से देखा जाय तो वे नव-औपनिवेशवादी संस्कृति के फैलाव से अत्यधिक चिन्तित दिखाई देते हैं। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में विशेषकर कहानियों में इन सारी स्थितियों की सशक्त अभिव्यक्ति हुई हैं।

अध्याय - दो

हिंदी कहानी: आधुनिक से समकालीन तक

अध्याय -2

हिंदी कहानीः आधुनिक से समकालीन तक

कहानी गद्य साहित्य का अत्यंत लोकप्रिय रूप है। विश्वभर के साहित्य में प्राचीन काल से ही कहानी की परंपरा विद्यमान है। भारत में भी कथा-साहित्य की लंबी और विकासमान परंपरा रही है। वेदों, उपनिषदों, बौद्धजातकों, पुराणों और महाभारत के अनेक प्रसंगों में विभिन्न कथाओं के सूत्र बिखरे पडे हैं। विशेष रूप से पंचतंत्र और हितोपदेश की कहानियाँ विश्व भर में प्रसिद्ध हैं। किंतु गद्य की जिस विशिष्ट विधा को आधुनिक युग में 'कहानी' नाम दिया गया, उसका स्वरूप प्राचीन भारतीय कथाओं से बिलकुल भिन्न है। वस्तुतः आधुनिक कहानी अंग्रेज़ी की 'शॉर्ट स्टोरी' और बांग्ला के 'गल्प' के प्रभाव से उपजी और विकसित हुई है।

हिंदी कहानी का उद्‌भव और विकास बीसवीं शताब्दी की देन है। कुछ विद्वान राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद की रचना 'राजा भोज का सपना', सैयद इंशा अल्लाखाँ की 'रानी केतकी की कहानी' और भारतेंदु हरिश्चंद्र की 'अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न' आदि रचनाओं को हिंदी की प्रारंभिक कहानियाँ स्वीकार करते हैं। लेकिन इन रचनाओं में आधुनिक कहानी के मूल तत्वों का अभाव है। सन् 1900 ई. में हिंदी

की महत्वपूर्ण साहित्यिक पत्रिका 'सरस्वती' का प्रकाशन हुआ, तभी से हिंदी कहानी की विकास-यात्रा प्रारंभ हुई। 'सरस्वती' के साथ-साथ 'हिंदी प्रदीप' तथा 'छत्तीसगढ़ मित्र' आदि पत्रिकाओं ने भी कहानी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 1900 ई. में 'सरस्वती' में किशोरीलाल गोस्वामी की कहानी 'इंदुमती' का प्रकाशन हुआ, जिसे बहुत समय तक हिंदी की पहली कहानी माना जाता रहा। बाद में इस कहानी पर शेक्सपियर की 'टेम्पेस्ट' का प्रभाव सिद्ध हो जाने के कारण इसकी मौलिकता पर प्रश्नचिह्न लग गया। लाला भगवानदीन की 'प्लेग की चुडैल', रामचंद्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय', बंग महिला की 'दुलाई वाली', माधवराव सप्रे की 'एक टोकरीभर मिट्टी' तथा 'एक पथिक का स्वप्न' आदि हिंदी की प्रारंभिक कहानियाँ हैं। इनमें से पहली मौलिक कहानी किसे माना जाए, इस पर विद्वान एकमत नहीं हैं। लेकिन इन सभी प्रारंभिक कहानियों ने मिलकर हिंदी कहानी के लिए ठोस भूमिका तैयार की।

'इंदु' पत्रिका के प्रकाशन के साथ हिंदी कहानी के विकास को गति मिली। 1911 में जयशंकर प्रसाद की कहानी 'ग्राम' इंदु में प्रकाशित हुई। प्रसाद के साथ ही प्रेमचंद तथा चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' का कहानी जगत में प्रवेश हुआ। इन तीनों कहानीकारों ने हिंदी कहानी को व्यवस्थित रूप दिया।

2.1. प्रेमचंद युग

प्रेमचंद का प्रवेश हिंदी कहानी केलिए क्रांतिकारी घटना सिद्ध हुई। सच्चे अर्थों में मुंशी प्रेमचंद को हिंदी कहानी का जनक और पोषक माना जा सकता है। प्रेमचंद के अनुसार- "सबसे उत्तम कहानी वह होती है जिसका आधार किसी मनोवैज्ञानिक सत्य पर हो।"[1] इसी विचार के अनुरूप उन्होंने घटनाओं के साथ-साथ चरित्रों की महत्-प्रतिष्ठा की। उन्होंने अपने पात्रों को यथार्थ की भावभूमि पर प्रस्तुत किया। मनुष्य को वास्तविक परिवेश के बीच उसकी समस्त शक्तियों और दुर्बलताओं के साथ अंकित किया। यथार्थ के धरातल पर स्थित होने के कारण इनकी कहानियों की भाषा शैली भी सरल, सहज, मुहावरेदार और प्रवाहपूर्ण है। प्रेमचंद ने लगभग तीन सौ कहानियाँ लिखीं जो 'मानसरोवर' नाम से आठ खंडों में संकलित हैं। 'पंच परमेश्वर', 'बडे घर की बेटी', 'मंत्र', 'मुक्ति मार्ग', 'दो बैलों की कथा', 'बूढी काकी', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'पूस की रात', 'कफन' आदि इनकी महत्वपूर्ण कहानियाँ हैं। हिंदी कहानी को व्यवस्थित कर उसे प्रौढ़ रूप प्रदान करने वाले कहानीकार प्रेमचंद के नाम पर ही इस युग की हिंदी कहानी 'प्रेमचंद युग' के नाम से जानी जाती है।

चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने 'बुद्ध का काँटा', 'सुखमय जीवन' और 'उसने कहा था' नामक तीन ही कहानियाँ लिखीं। कहानी के क्षेत्र में उनकी

प्रसिद्धि का आधार 'उसने कहा था' रही है। यह गुलेरी जी की ही नहीं हिंदी की भी अत्यंत मार्मिक, प्रभावशाली और लोकप्रिय कहानी मानी जाती है।

इस युग में प्रेमचंद की यथार्थवादी सामाजिक दृष्टि लेकर अनेक रचनाकार कहानी लेखन में प्रवृत्त हुए। विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' ने 'काकी', 'न्याय' आदि कहानियाँ लिखीं। इस परंपरा के साथ-साथ आचार्य चतुरसेन और पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' ने सामाजिक कुप्रथाओं, रूढ़ियों और मृत परंपराओं के विरुद्ध विद्रोह की कहानियाँ लिखीं। चतुरसेन की रचनाओं में 'दुखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी' और 'दे खुदा की राह पर' कहानियों को काफी प्रसिद्धि मिली। उग्र की 'चाकलेट', 'गोली', 'जल्लाद' आदि कहानियाँ प्रसिद्ध हुईं।

2.2. प्रसाद युग

जयशंकर प्रसाद ने 'ग्राम' कहानी के द्वारा हिंदी कहानी में प्रवेश किया। प्रेमचंद के समकालीन होने पर भी प्रसाद की कहानियाँ विषय और शिल्प के स्तर पर प्रेमचंद से एकदम अलग हैं। प्रसाद की कहानियों में संस्कृति, इतिहास और परंपरा के स्वर प्रबल हैं। ये कहानियाँ भाव प्रधान हैं इनका मूल विषय राष्ट्रीयता, प्रेम, कर्तव्य, त्याग आदि आदर्श मूल्यों से जुड़ा हुआ है। प्रसाद की कहानियों में

पात्रों के भीतर चलते अंतर्द्वंद्व का काव्यात्मक चित्रण हुआ है। विषय के अनुरूप उनकी भाषा भी परिष्कृत और संस्कृतनिष्ठ है। 'आकाशदीप', 'पुरस्कार', 'ममता', 'गुंडा' आदि उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं। प्रसाद की भावात्मक शैली पर चंडीप्रसाद हृदयेश, रायकृष्ण दास, विनोद शंकर व्यास आदि ने कहानियाँ लिखीं। वृंदावनलाल वर्मा की कहानियाँ सोद्देश्य तथा ऐतिहासिक हैं। समय के साथ-साथ हिंदी कहानी के प्रकारों में भी विविधता आई और चरित्र प्रधान, वातावरण प्रधान, कथानक प्रधान, कार्य प्रधान, प्रतीक संबंधी, हास्य प्रधान आदि अनेक प्रकार की कहानियाँ लिखी गईं। शैली की दृष्टि से भी वर्णात्मक, संभाषणात्मक, पत्र, डायरी आदि विविध विधियाँ अपनाई गईं।

प्रसाद युग के बाद हिंदी कहानी अनेक नवीन धरातलों पर विकसित हुई। हिंदी कहानी लेखन पर रूस की मार्क्सवादी विचारधारा तथा फ्रायड के यौन सिद्धांत का भी व्यापक प्रभाव पड़ा। प्रेमचंद के पश्चात् हिंदी कहानी में नई दृष्टि और सशक्त शिल्प लेकर आने वाले लेखक हैं - जैनेंद्र। उनकी कहानियों में हृदय की सूक्ष्म मनोवृत्तियों का विश्लेषण है। विचार उनकी कहानियों के केंद्र में है और ऊपर से सीधी, सपाट लगती भाषा मन के गूढ़ रहस्यों को खेलने में समर्थ है। 'एक रात', 'ध्रुव यात्रा', 'नीलम देश की राजकन्या' आदि इनके प्रमुख

कहानी-संग्रह हैं।

जैनेंद्र के समान ही मनोवैज्ञानिक कहानियाँ लिखनेवाले महत्वपूर्ण रचनाकार हैं - अज्ञेय और इलाचंद्र जोशी। अज्ञेय की कहानियाँ चरित्र प्रधान हैं और उनमें जीवन के बाह्य संघर्ष की अपेक्षा अंतःसंघर्ष का चित्रण मनोवैज्ञानिक ढंग से किया गया है। 'खेल', 'कडियाँ', 'प्रतिध्वनियाँ', 'रोज', 'शरणदाता' आदि उनकी विख्यात कहानियाँ हैं। इलाचंद्र जोशी की कहानियाँ मनोविश्लेषणवाद से प्रभावित हैं।

यशपाल प्रगतिवादी विचारधारा से प्रभावित होकर लिखने वाले महत्वपूर्ण कहानीकार हैं। इनकी कहानियाँ सामाजिक यथार्थ से जुड़ी हुई हैं। उन्होंने समाज की सभी समस्याओं का केंद्र आर्थिक परिवेश को माना है। यशपाल की कहानियाँ रूढिग्रस्त समाज के खोखलेपन को उजागर करती हैं। 'प्रतिष्ठा का बोझ', 'पुलिस की दफा', 'सुख-दुख', 'पराया सुख', 'परदा' आदमी का बच्चा आदि इनकी महत्वपूर्ण कहानियाँ हैं।

यशपाल के अतिरिक्त मन्मथनाथ गुप्त, रांगेय राधव, भैरवप्रसाद गुप्त, नागार्जुन, अमृतराय, चंद्रगुप्त विद्यालंकार, विष्णु प्रभाकर आदि कहानीकारों ने भी सामाजिक सोद्देश्यता को अपनी कहानियों में व्यक्त किया। रांगेय राघव की कहानियाँ जीवन के गहरे अनुभवों से जुड़ी हैं।

अमृतराय ने मध्यवर्ग की कुंठाओं का चित्रण किया है। चंद्रगुप्त विद्यालंकार की कहानियों में कथ्य और शिल्प की ताजगी है। विष्णु प्रभाकर ने समसामयिक पारिवारिक-सामाजिक जीवन को लेकर कहानियाँ लिखीं।

2.3. नई कहानी

सन् 1950 के लगभग हिंदी कहानी में नई प्रवृत्तियों और शिल्प विधानों का उदय हुआ। वस्तुतः स्वतंत्रता के बाद भारत की राजनीतिक और सामाजिक स्थितियों में जो परिवर्तन आए उन्होंने वैचारिक स्तर पर भी युवा कथाकारों को झकझोरा। 'नई कहानी' नाम से जिस आंदोलन की शुरुआत हुई, उसने शाश्वत मूल्यों की अपेक्षा अनुभव की प्रामाणिकता पर अधिक बल दिया। नए कहानीकारों में मोहन राकेश, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, राजेन्द्र यादव, भीष्म साहनी, धर्मवीर भारती, अमरकांत आदि ने महानगरों के जीवन को अपना कथ्य बनाया। विघटित होते सामाजिक और पारिवारिक मूल्य, संबंधों के बदलते स्वरूप और उसके कारण व्यक्ति का अकेलापन, टूटन और त्रास इनकी कहानियों में उद्घाटित हुए। मार्कंडेय, फणीश्वरनाथ रेणु, शिवप्रसाद सिंह आदि ने ग्रामीण जीवन के अनुभवों की सुंदर कहानियाँ लिखीं।

नई कहानी और उसके बाद के कहानी आंदोलनों में महिला लेखिकाओं ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मन्नू भंडारी, कृष्णा

सोबती, शिवानी, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया, मेहरुन्निसा परवेज, चित्रा मुद्गल, नासिरा शर्मा, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, चंद्रकांता आदि अनेक लेखिकाओं ने नारी जीवन को केंद्र बनाकर समकालीन समाज के जटिल यथार्थ को अभिव्यक्त किया। स्त्री की परंपरागत छवि के विपरीत इनकी कहानियों में स्वाधीनता के लिए संघर्ष करती, अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित करती, आत्मनिर्भर नारी की सशक्त छवि उभरी है। स्त्री जीवन की समस्याओं के अंकन के साथ-साथ समाज में व्याप्त विसंगतियों को भी इन लेखिकाओं ने स्वर दिया है।

'नई कहानी' के बाद हिंदी कहानी निरंतर नई दिशाओं में विकसित होती रही है। नई कहानी ने यथार्थ की अभिव्यक्ति और अनुभूति की ईमानदारी पर बहुत बल दिया था। उसके बाद भी यथार्थ की अनेक परतें कहानियों में खुलती रहीं। बहुत-से-कथा-आंदोलन एक विशेष दृष्टि के आग्रह से जीवनगत यथार्थ को अंकित करने में संलग्न रहे। 'अकहानी', 'समांतर कहानी', 'सचेतन कहानी', 'जनवादी कहानी' - इन सभी कहानी आंदोलनों ने कहानी के विकास में अपनी भूमिका निभाई और फिर समय के धुँधलके में खो गए। नई कहानी के बाद कोई एक विशेष प्रवृत्ति केंद्र बनकर सभी रचनाकारों को एक सूत्र में बाँधे रही हो ऐसा नहीं हुआ।

युगीन-जीवन बोध की सार्थक अभिव्यक्ति 'नई कहानी' में हुई

है, क्योंकि स्वातन्त्र्योत्तर सामयिक जीवन बोध को नई कहानीकारों ने भोगा था। इसलिए उनकी कहानियों में आम जनता का दर्द भली-भाँति उभरा है। इस आन्दोलन से जुड़े प्रमुख कहानीकार हैं - राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, कमलेश्वर, फणीश्वर नाथ रेणु, भीष्म साहनी, निर्मल वर्मा, उषा प्रियंवदा, शिवप्रसाद सिंह, हरिशंकर परसाई आदि। फणीश्वर नाथ रेणु, शिवप्रसाद सिंह, मार्कण्डेय आदियों ने ग्रामीण परिवेश को आधार बनाकर कहानियाँ लिखीं तो उषा प्रियंवदा, निर्मल वर्मा आदि की रचनाओं में भारतीय और पाश्चात्य दोनों परिवेशों का चित्रण मिलता है। 1956 1956 के आसपास पुरानी पीढ़ी से हटकर एक नई पीढ़ी उभरकर आई। इन कहानीकारों में ज्ञानरंजन, महेन्द्र भल्ला, काशीनाथ सिंह, कृष्ण बलदेव वैद, शानी आदि के नाम प्रमुख हैं।

1960 के बाद की कहानी 'साठोत्तरी कहानी' के नाम से जानी जाती है। सन् साठ के बाद कहानी 'साठोत्तरी कहानी' के नाम से जानी जाती है। सन् साठ के बाद कहानी के क्षेत्र में कई आन्दोलन उठे और कई नए कहानीकार भी उभरे। सन् साठ के बाद के आन्दोलन 'नई कहानी' के पूरक न बनकर कई बार विरोधी दल ही दिखाई पड़ने लगे। 'नई कहानी' के बाद सचेतन कहानी, अकहानी, समान्तर कहानी, सहज कहानी आदि कई नई धाराएँ विकसित हुईं।

2.4. अकहानी

'अकहानी' पेरिस में जन्मी 'एण्टी स्टोरी' का भारतीय संस्करण है। डॉ.सूर्यप्रकाश दीक्षित ने अकहानी का विश्लेषण करते हुए कहा है - "अकहानी का 'अ' केवल एक विशेषण ही नहीं बल्कि एक व्यक्ति की निर्थकता, भाषा और भावों की अपूर्णता और व्यक्तित्व की विसंगति को प्रश्रय देता है।" 'मंच' के पत्रिका सन् 1973 के अंक में स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी से सम्बन्धित एक लेख में कहा गया है - "साठोत्तर' या 'अकहानी' की आवाज़ पुरानी पड़ती जा रही पीढ़ी के 'भीगे हुए यथार्थ' 'अनुभव की प्रामाणिकता', 'प्रतिबद्धता' जैसे खोखले नारों के खिलाफ़ एक सख्त कार्यवाही थी। इस आवाज़ ने 'नई कहानी' के झण्डाबरदारों को उनके पुराने पड़ जाने का अहसास कराया। और उन्हें बिलकुल उसी तरह बौखला दिया। जैसे अपने ज़माने में उन्होंने जैनेन्द्र-अज्ञेय आदि को बौखलाया था।"[2]

मानवीय भावनाओं में आई क्षीणता, घृणा, प्रेम की विडम्बना, पारिवारिक विघटन, काम के विकृत रूप, अकेलापन, भय आदि अकहानी का विषय बना। यह मुख्यतः 'कामू' के दर्शन को लेकर चलती है। इसके अलावा यह एब्सर्ड-बोध या व्यर्थता बोध को लेकर चलती है। इस धारा के प्रमुख कहानीकार हैं - श्रीकान्त वर्मा, गंगाप्रसाद विमल, दूधनाथ सिंह, रवीन्द्र कालिया, सतीश जमाली, जगदीश चतुर्वेदी,

ज्ञानरंजन, रमेश बक्षी, महेन्द्र भल्ला, प्रयाग शुक्ल आदि।

2.5. सचेतन कहानी

सचेतन कहानी का मुख्य प्रवर्तक डॉ.महीप सिंह हैं। इस आन्दोलन का प्रारम्भ डॉ.महीपसिंह द्वारा सम्पादित 'आधार' के सचेतन कहानी विशेषांक से माना जाता है। डॉ. महीपसिंह के अनुसार 'सचेतन कहानी' सक्रिय भाव बोध की कहानी है। पश्चिम की भौंडी नकल और ओढ़ी हुई मानसिकता से प्रेरित होकर जिन्दगी की व्यर्थता, नितान्त अकेलेपन और बनावटी घुटन का वह प्रदर्शन नहीं करती है। और वास्तविकता यह है कि जिन लेखकों ने ऊब, अकेलापन, अजनबीपन की बातें कीं, वे कभी अपने व्यक्तित्व का उचित नियमन नहीं कर सके, जिससे उनकी अभिव्यक्ति भी सदैव संगतहीन धुँधली और असम्बद्ध ही रही है।"[3]

डॉ.मंजुलता सिंह के अनुसार - "सचेतन कहानीकार स्थिरता के टैबूज़' को नकारता है और जीवन स्थितियों में बदलते मूल्यों की स्वीकृति के साथ नवीन सम्भावनाओं को पूरी आस्था के साथ ग्रहण करने के पक्ष में हैं।"[4]

इस धारा के अन्य प्रमुख कहानीकार हैं - कुलभूषण, कमल जोशी, ममता कालिया, वेद राही, हिमांशु जोशी, मनहर चौहान, मधुकर सिंह, सोमा मीरा आदि।

2.6. समांतर कहानी

सन् 1972 में समान्तर के प्रकाशन से समान्तर कहानी चेतना का प्रारम्भ माना जा सकता है। बाद में 'सरिका' के समान्तर कहानी विशेषांक निकले। इसकी वैचारिकता को कमलेश्वर ने 'मेरा पन्ना' के अन्तर्गत और ललित मोहन अवस्थी आदि ने स्वतन्त्र लेखन के द्वारा प्रकट किया। बहुत से युवा कहानीकारों ने कमलेश्वर का साथ दिया और इसे पनपने में मदद दी। इसके अन्तर्गत आने वाले प्रमुख कहानीकार हैं - कामता नाथ, दिनेश पालीवाल, मधुकर सिंह, जितेन्द्र भाटिया, सुधा अरोड़ा आदि।

इसके बारे में कमलेश्वर का यही मानना है - "परिवर्तित विचार और मूल्य ही 'संस्कार ग्रस्तता' का पर्याय हो सकते हैं। परिवर्तित विचार या मूल्य शून्य में से नहीं आते। वे मनुष्य को उन्हीं स्थितियों और विषमताओं में से स्वयं प्राप्त करने होते हैं, जहाँ उसके अस्तित्व की शर्तों को पैदा किया जाता है। यहीं पर हरेक को जीने की शर्तों और अपनी जीने की अपेक्षाओं का रिश्ता तय करना पड़ता है।"[5]

ललित मोहन अवस्थी के अनुसार - "वस्तुतः समान्तर लेखन सही वामपंथी चिन्तन से युक्त आज का वह लेखन है, जिसे 'प्रगतिशील विशेषण समग्रतः अपने आप में समेट नहीं पाता, ठीक वैसे ही जैसे

कि 'मानवतावाद' शब्द क्रान्ति की परिभाषा को व्यक्त नहीं कर पाता।"[6]

2.7. समकालीन कहानी

सन् 1960-65 के बीच नई कहानी का नशा उतरने लगा तो हिन्दी कहानी क्षेत्र में नई धारा जन्म लेने लगी - 'समकालीन कहानी'। समकालीन कहानी असल में नई कहानी के कथ्यगत और शिल्पगत रूढ़ियों को तोड़ने के प्रयास के रूप में आई हैं। इसका कथ्य इतना वैविध्यपूर्ण है कि युग-जीवन की कोई भी समस्या, चिन्ता और महत्वपूर्ण प्रश्न ऐसा नहीं है जिसे कहानी में विषय न बनाया गया हो। निम्न मध्यवर्ग, मध्यवर्ग, नौकरी-पेशा लोगों की आर्थिक समस्याएँ, बढ़ती महँगाई, भ्रष्ट शासन तन्त्र आदि सभी बातें इस दौर की कहानियों का विषय बनीं। साम्प्रदायिकता की भयंकर समस्या, दलित समाज और नारी की समस्याओं पर भी सशक्त कहानियाँ लिखी गईं। इस धारा के कहानीकारों में उल्लेखनीय हैं - रवीन्द्र कालिया, ज्ञानरंजन, गोविन्द मिश्र, गिरिराज किशोर, नरेन्द्र कोहली, वेद राही, गंगा प्रसाद विमल, महेन्द्र भल्ला, ममता कालिया, सुधा अरोड़ा, मृणाल पाण्डे, राजी सेठ, निरुपमा सेवती, मोना गुलाटी, अनिता अलीक, चित्रा मुद्गल, मृदुला गर्ग, मंजुल भगत, दीप्ति खण्डेलवाल, वर्तिमा अग्रवाल आदि।

डॉ. पुष्पपाल सिहं के अनुसार - 'पिछले दो दशकों की कहानी में कहानीकार की जो चिन्ताएँ प्रमुख रही हैं, उनमें देश पर इलेक्ट्रोनिक मीडिया द्वारा हो रहे सास्कृतिक आक्रमण, उपभोक्तावाद के चलते पैसे की अन्धी दौड़, सुरसा का मुँह फाड़ती हमारी नित्य नई आवश्यकताएँ, विज्ञापन जगत् द्वारा आवश्यकताओं का सृजन, उनको पाने की उत्कट आकाँक्षाएँ, मूल्यों के टूटने की पीड़ा, राजनीति का बढ़ता अपराधीकरण, जोड़-तोड़ की राजनीति आदि पर प्रमुखता से लिखा गया। इस प्रकार आज हिन्दी कहानी का फलक अत्यन्त व्यापक हैं।"[7]

बदलते समय के साथ-साथ समस्याएँ भी बदल रही हैं। राजनीति, व्यवस्था के सभी रूपों पर हावी होकर उसे भीतर से खोखला कर रही है। समाजवाद के अंत तथा भूमंडलीकरण के नाम पर एकध्रुवी होती दुनिया में पूँजीवाद का नया संकट उठ खड़ा हुआ है। मीडिया की ताकत का बोलबाला है और उसके सामने व्यक्ति-अस्मिता संकटग्रस्त हो रही है। उत्तर-आधुनिक समाज की सच्चाइयों ने कहानी के स्थापित ढ़ाँचे में - उसके कथ्य और शिल्प में बहुत से परिवर्तन किए। इनके अतिरिक्त स्त्री-विमर्श और दलित-विमर्श के मुद्दे भी जोर-शोर से उठाए गए हैं। कहानीकारों की एक लंबी पंक्ति अपने-अपने दृष्टिबोध के साथ इन सभी स्थितियों की और ध्यान आकृष्ट कर रही है। जहाँ तक आज की कहानी की स्थिति और गति का सवाल है वहाँ यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि कहानी

उत्तरोत्तर विकास कर रही है और सामाजिक ढाँचे के प्रति आलोचना एवं आत्मविश्लेषण की दृष्टि पैदा कर साहित्य और समाज दोनों में अपनी सक्रिय भूमिका निभा रही है। आज के विशिष्ट कहानीकारों में बहुत-से नाम उल्लेखनीय हैं - उदय प्रकाश, अब्दुल बिस्मिल्लाह, शिवमूर्ति, संजय, संजीव, संजय खाती, सतीश जमाली, धीरेंद्र अत्साना, स्वयं प्रकाश, अरुण प्रकाश, अलका सरावगी, गीतांजलि श्री, जया जादवानी, ओमप्रकाश वाल्मीकि, अजय नवरिया आदि। हिंदी कहानी आज भी कथ्य और शिल्प के नए प्रतिमान रचते हुए विकास की अनेक दिशाओं में आगे बढ़ रही है।

साठोत्तर हिन्दी साहित्य में सामाजिक स्वरूप का व्यापक रूप से चित्रण होने लगा था जो अस्योत्तर युग में तीव्र गति प्राप्त करती है। समाज में व्याप्त वर्ण व्यवस्था, जाति-पाँति, छुआछूत, साम्प्रदायिकता काव्य एवं अन्य सामाजिक समस्याओं को इस काल की रचनाओं में अंकित किया गया। कहानियों में इसकी सफल और व्यापक अभिव्यक्ति हुई। बौद्धिक एवं वैज्ञानिक विकास के साथ समाज की मानसिकता में भी पर्याप्त परिवर्तन आया। समाज में नारी स्वतंत्रता को भी प्रोत्साहन मिला। समकालीन समय में नारी केवल घर तक ही सीमित नहीं रही, वह धीरे-धीरे सामाजिक कार्यों और नौकरी पेशा से भी संबद्ध हो गई। नारी शिक्षा के क्षेत्र में पर्याप्त विकास हुआ।

स्त्री-पुरुष संबंध में भी बदलाव आया। अब कोई भी स्त्री विवाहित होने पर पुरुष की दासी या गुलाम नहीं बनती। उसे समानाधिकार प्राप्त हो गई है। अत्याचार के विरुद्ध वह आवाज़ उठा सकती है, लड सकती है। फिर भी समाज में पारंपरिक आदर्श, रूढियाँ और अंधविश्वास भी व्याप्त है। भौतिकता और आर्थिक परिस्थिति के कारण समाज में अनेक समस्यायें उठ खडी हुईं और सामाजिक मूल्यों में विघटन आ गया। इस बदलते परिवेश में अनेक समस्यायें उठ खडी हुईं। जन संख्या की वृद्धि, बेकारी के कारण युवा वर्ग का असंतोष और आक्रोश, अनास्था, कुंठा आदर्शों के प्रति मोहभंग आदि इसके उदाहरण हैं।

भूमण्डलीकरण एवं बाज़ारवाद के कारण उत्पन्न समस्यायें इन से अधिक खतरनाक हैं। अपना स्वत्व एवं अस्तित्व खोने की स्थिति में सब कुछ नष्ट होने की अवस्था उत्पन्न हो गई है। अस्योत्तर हिन्दी साहित्य में विशेषकर कहानियों में इसका व्यापक चित्रण हुआ है। इस संदर्भ में उदयप्रकाश की कहानियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं। उदय प्रकाश सामाजिक प्रतिबद्धता के साहित्यकार हैं। इसलिए उनकी अधिकांश कहानियों में समाज की विभिन्न परिस्थितियों का सजीव चित्रण हुआ है। समकालीन परिवर्तनशील समाज को अत्यंत सूक्ष्म दृष्टि से प्रतिबिंबित करने में उदय प्रकाश अपनी कहानियों के द्वारा सफल हुए हैं। भूमण्डलीकरण के इस नए माहौल में वे गरीब भारतीय जनता की

पीड़ा महसूस करते हैं और देखते हैं कि वही पुराना परिवेश विकराल रूप धारण करके अब भी हमारे सामने प्रस्तुत है।

राजनैतिक प्रभावों से दूर रहकर मानव की समस्याओं से जूझनेवाले उदय प्रकाश कवि निराला की याद दिलाता है। पीडित मानवता के प्रति दोनों की समान संवेदना है। समाज से प्रतिबद्ध एवं जनहित के साहित्यकार होने के नात्ते उन्होंने अपनी कहानियों में समकालीन सामाजिक स्थितियों का यथार्थ चित्रण किया है।

संदर्भ सूचीः

1 . प्रेमचंद - कुछ विचार पृः 33

2. डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ : हिन्दी कहानी : एक अन्तर्यात्रा पृ.48 से उद्धृत

3. डॉ. महीप सिंह, सचेतन कहानी : रचना और विचार (डॉ.मंजुला सिंह, हिन्दी कहानी में युग बोध P-44 से उद्धृत)

4. डॉ. मंजुला सिंहः हिन्दी कहानी में युग बोध पृ.44

5. कमलेश्वर : सारिका फरवरी 1975 पृ. 413

6. ललितमोहन : सारिका मार्च 1975 पृ. 88

7. डॉ. पुष्पपालसिंह : कथामंजरी की भूमिका : पृ. 19

अध्याय - तीन

उदय प्रकाशः व्यक्तित्व एवं साहित्य सृजन

अध्याय - 3

उदयप्रकाश : व्यक्तित्व एवं साहित्य सृजन

समकालीन हिन्दी साहित्य के नवीनतम हस्ताक्षर उदयप्रकाश जी समाजवादी एवं मानवतावादी साहित्यकार हैं। आप प्रमुख रूप से कवि और कहानीकार हैं। साथ ही साथ आपने निबन्ध, आलोचना एवं संस्मरण भी लिखे हैं और प्रचुर मात्रा में अनुवाद भी किया है। आपकी कहानियों का अनुवाद अंग्रेज़ी तथा लगभग सभी भारतीय भाषाओं में होता आ रहा है। आपकी रचनाओं में समकालीन जीवन का संवेदनात्मक चित्रण हुआ है, जो अधुनातन सामाजिक यथार्थ का जीवन्त दस्तावेज़ है।

3.1 व्यक्तित्व

'व्यक्तित्व' शब्द अंग्रेज़ी के 'पर्सनालिटी' का पर्यायवाची शब्द है। व्यक्ति का जन्म - जात शारीरिक क्षमताओं, मानसिक शक्तियों, प्रवृत्तियों और स्वभावगत चारित्रिक गुणों के कुल योग को व्यक्तित्व कह सकते हैं। डॉ.गंगाप्रसाद पाण्डेय के अनुसार - "व्यक्तित्व व्यक्ति की वह विशेषता है जो उसे अन्य व्यक्तियों से भिन्न करती हुई उसके निजत्व का स्वरूप धारण करती है।"[1]

साहित्यकार के व्यक्तित्व और कृतित्व में घनिष्ठ संबंध होता है। अर्थात् साहित्यकार का व्यक्तित्व उसकी कृतियों में आंका जा सकता है। अतः कृतित्व को पूर्णरूप से समझने केलिए व्यक्तित्व का नितान्त ज्ञान आवश्यक है। उदयप्रकाश जी की रचनाओं के पठन-पाठन से हम उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं को समझ सकते हैं।

3.1.1 जन्म और परिवार

उदीयमान साहित्यकार उदयप्रकाश जी का जन्म मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिले के सीतापुर नामक एक छोटे से गाँव के एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार में 1952 जनवरी 1 को हुआ। नियति की विडंबना यह थी कि बारह वर्ष की अल्पायु में ही उदयजी की माता श्रीमती गंगादेवी स्वर्ग सिधर गयी। कुछ वर्ष बाद पिता श्री.प्रेमकुमार सिंह ने भी दम तोड दिया, तो बालक उदयजी आश्रयहीन हो गये।

उदयजी का बचपन सीतापुर गाँव में बीता। माँ उन्हें कविताएँ सुनायी करती थीं। अतः बचपन से ही उनके मन में कविताओं पर एक विशेष रुचि उत्पन्न हो गयी थी।

उदयजी के पिताजी साहित्यिक अभिरुचि के व्यक्ति थे। घर में सभी साहित्यिक पत्रिकाएँ आती थीं। फूफी गाती थीं और भजन लिखती थीं। इससे

बालक उदय पर एक ओर साहित्य, तो दूसरी ओर आध्यात्म का असर हुआ।

उदयजी के बचपन में एक अविस्मरणीय घटना घटी थी। बचपन में वे 'सोन' नदी के जल में लगभग डूब गया था। बालक उदय मर ही जाता था। लेकिन नदी के तट पर कपडे धो रही धनपुरिआइन नामक स्त्री ने उसे बचा लिया। उसने नदी की धार में तैरकर बालक को निकाला। उसके परिश्रम से जब बालक दुबारा ज़िन्दा हुआ, तो उसको इतना आश्चर्य हुआ कि वह रोने लगी। इस घटना ने बालक उदयजी के मन में स्त्रियों के प्रति विशेष चाह उत्पन्न की। तब से वे स्त्रियों को बहुत चाहते हैं। क्योंकि सिर्फ स्त्रियाँ जानती हैं कि किसी जीवन को नया-नया जन्म कैसे दिया जाता है। स्त्रियों के बारे में उदयजी का विचार यह है –"वह हमें बडे-बडे संकटों से निकालती हैं। लेकिन अक्सर एक ओर बडे संकट में डाल देती हैं। वह है, उन से प्रेम का संकट।"[2]

3.1.2 शिक्षा

उदयजी की प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही हुई थी। लेकिन सौभाग्य की बात यह हुई कि एक अध्यापक को उदयजी की ज़िन्दगी पर विशेष रुचि लगी। इन्होंने उदयजी को अपने घर में शरण दी तथा उनको पढ़ाने लगे। जब उन्हें यह पता चला कि कुमार उदयजी कविता लिखते हैं तथा चित्र बनाते हैं,

तो उस अध्यापक जी की खुशी का ठिकाना न रहा। उन्होंने उदयजी को स्कूल में भेजकर पढ़ाया तथा आगे की शिक्षा केलिए भी आवश्यकतानुसार सहायता की।

उदयजी ने सागर विश्वविद्यालय से विज्ञान में स्नातक बन गये। फिर उन्होंने उसी विश्व-विद्यालय की हिन्दी एम.ए. की परीक्षा आचार्य 'नन्ददुलारे वाजपेयी स्वर्ण पतक' समेत पास की। बाद में आपने जवहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में सफलता पूर्वक शोधकार्य किया तथा पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की।

3.1.3 नौकरी

स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त होते ही उदयजी सागर विश्वविद्यालय में अध्यापक हो गये। बाद में वे मध्यप्रदेश सरकार के संस्कृति विभाग के विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी बन गये।

आपने कुछ सालों तक 'Times of India' के प्रतिष्ठित साप्ताहिक 'दिनमान' के संपादक विभाग में काम किया। 'सन्डेमेल' में सहायक संपादक, प्रेस ट्रेस्ट आफ इंडिया के टेलिविज़न विभाग में विचार और पटकथा लेखन का कार्य भी आपने किया। इन्डिपेन्टेंन्ट टेलिविज़न में विचारक और पटकथाकार के रूप में भी उदयजी ने अपनी सेवा दी।

उदयजी दो वर्ष तक 'टाइम्स रिसर्च फाउँडेशन' नामक संस्था में पत्रकारिता के अध्यापक रहे। पत्रकारिता में अभिरुचि रखने वाले उदयजी एक लम्बे अरसे तक अंग्रेज़ी पत्रिका 'एमिनेन्स' में भी काम किया था।

3.1.4 वैवाहिक जीवन

उदयजी शादी-शुदा साहित्यकार हैं, जिनके पत्नी और दो बेटे हैं। पत्नी का नाम कुमकुम सिंह है, जो स्कूल में पढ़ाती हैं। बडा बेटा जर्मनी में पार्ट टाइम नौकरी करता हुआ पढ रहा है। छोटा बेटा भी विद्यार्थी है। उदयजी संतुष्ट पारिवारिक जीवन बिता रहे हैं। साहित्यिक जीवन में उदयजी को अपनी पत्नी का मनोयोग और सहयोग पूर्णरूप से प्राप्त हो रहा है।

3.1.5 साहित्यिक प्रेरणा

उदयजी मूलतः कवि है। वे यूगीन चेतना से प्रभावित हैं। उनकी कविता और कथा साहित्य में जीवन-दर्शन की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। समकालीन गतिविधियों के प्रति वे सतर्क हैं। समकालीनता आपकी कृतियों का मूलतत्व है, जिसके माध्यम से आपके दार्शनिक विचार संचरित हुए हैं।

वर्तमान हिन्दी के ख्यात कवि एवं कथा साहित्यकार उदयजी को कविता लिखने की प्रेरणा अपनी माँ से प्राप्त हुई थी। कविता के बारे में पहली जानकारी अपनी माँ की कविताओं के पन्नों से ही मिली थीं। उसकी माँ जब

मिरजापुर की ससुराल आयी थी, तो वे सारे गीत अपने साथ ले आयी थीं, जो बचपन में अपनी सहेलियों के साथ निज गाँव में गाया करती थीं। उसके बारे में उदय प्रकाश ने स्वयं कहा है – "कजली, सोहर, चैती, फगुआ, बिरहा, विदेसिया आदि लोक गीतों के प्रति बचपन में ही उदयजी के मन में जो पहला लगाव उत्पन्न था उसका यश केवल माँ को ही दिया जा सकता है।"[3]

उदयजी का बचपन छत्तीसगढ और बघेलखण्ड के सीमान्त के इलाके के एक छोटे से गाँव में गुज़रा था। वहाँ उन्होंने सैला, सुआर, करमा, ज्यौनार, कलेवा, गारी, साल्हो, ददरिया जैसे लोकगीत सुने थे। इसके अलावा वहाँ की पेशेवर जातियों के मज़दूर फसल-कटाई के बाद उनके घर कटाई के बाद के कामों केलिए आते-जाते थे। उन लोगों से बालक उदयजी के निरन्तर संपर्क-सहवास के कारण, 'सखन की कथा', 'राजा अमान की कहानी' जैसी कहानियों ने बालक के मन में अमिट छाप छोड दी थीं।

यह कहना मुश्किल है कि उन लोकगीतों में वह संगीत और कविता थी जो बालक उदयजी को अपने भीतर डुबा लेती थी। यह भी कोई नहीं कह सकता कि बचपन में सुनी कहानियों के पात्रों से संबन्धित बात थी, जिसे उदयजी कभी कविता या संगीत से अलग नहीं कर पाता था। क्योंकि आज

भी हर-एक अच्छी कहानी में कविता और संगीत एक साथ पाने की इच्छा रही जाती है।

उदयजी तेरह साल का जब हुआ तो माँ गुज़र चुकी थी। उन्होंने कविताएँ इसके पहले लिखनी शुरू कर दी थीं। स्मृति पर बहुत ज़ोर डालने पर भी अब उन्हें यह याद नहीं आता, कब से कविता लिखी गयी। उनकी बलवती धारणा यह है कि बिलकुल संभव है कि चित्र रचना के पहले ही कविताओं की शुरुआत की हो।

3.2 साहित्य रचना

किसी भी साहित्यकार का व्यक्तित्व, उनकी रचनाओं के दावारा ही पहचाना जा सकता है, अर्थात् साहित्यकार का व्यक्तित्व उनकी कृतियों से अलग नहीं आंका जा सकता।

उदयप्रकाशजी के साहित्यिक व्यक्तित्व की खोज उनके काव्य, कहानी और उपन्यास में ढूँढा जा सकता है। क्योंकि वे मूल रूप से पहले कवि और बाद में कथा-साहित्यकार हैं।

3.2.1 कवि उदय प्रकाश

कवि उदयजी के अभी तक चार कविता संग्रह-प्रकाशित हुए हैं। वे इस प्रकार हैं–

1. सुनो कारीगर (1980)

2. अबूतर-कबूतर (1984)

3. रात में हारमोणियम (1998)

4. एक भाषा हुआ करती है। (2009)

3.2.2 कहानीकार उदयजी

उदयजी के अभी तक नौ कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए हैं। वे इस प्रकार हैं–

1. दरियायी घोड़ा (1992)

2. तिरिछ (1990)

3. ..... और अंत में प्रार्थना (1994)

4. पॉलगोमरा का स्कूटर (1997)

5. पीली छतरीवाली लड़की (लम्बी कहानी, (2001)

6. दत्तात्रेय का दुःख (2002)

7. मोहनदास (लम्बी कहानी, (2006)

8. मैगोसिल (कहानी, (2006)

9. अरेबा-परेबा (कहानी, (2006)

उदयजी कहानी के समकालीन प्रचलित मुहावरे को तोड़कर जीवन के कुछ संकटपूर्ण स्थितियों और विडम्बनाओं पर तटस्थ दृष्टि डालनेवाले नये कहानीकार के रूप में उभरे हैं।

उदयजी की कहानियाँ आज के विश्वव्यापी पूँजीवाद के चलते उग आयी हुई है। अपनी कहानियों में आप ने मुक्तिबोध के फैंटसी शिल्प की तर्ज पर स्वप्न और यथार्थ के धूप - छाँहों के मेल से एक खास किस्म का 'जादुई यथार्थ' विकसित किया है। डॉ.तिवारी जी ने ठीक ही कहा है – "इस प्रकार कथ्य और शिल्प दोनों स्तरों पर उदयजी की कहानियाँ अपनी मौलिकता और नवीनता में बजोड हैं।"[4]

उदय जी की कहानियों में समकालीन संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर आयी मूल्यच्युति के विनाशकारी चित्र प्रस्तुत किये गये हैं। भूमण्डलीकरण, बाज़ारवाद आदि नव्य संस्कृतियों से पीडित होनेवाले भारतीय समाज के निम्न-मध्यवर्गीय और निचले स्तर के लोगों का आँखों देखा चित्रण भी आपकी कहानियों में मिलता है। इन सबके अतिरिक्त वर्तमान राजनीति और

शासन में एक संक्रामक रोग के समान व्याप्त भ्रष्टाचार, पुलिस की क्रूरता तथा पैसे के बल पर सत्तारूढ़ शासक वर्ग की नृशंस एवं निंदनीय कार्यवाहियों की अभिव्यक्ति मर्मस्पर्शी ढंग से हुई है।

उदयजी का पहला प्रकाशित कहानी-संग्रह हैं 'दरियायी घोड़ा'। इसमें सात कहानियाँ संकलित हैं, जिसमें 'टेपचु' नामक कहानी बहुचर्चित हुई हैं। शोषण और दमन के खिलाफ सर्वहारा वर्ग के समझौताविहीन संघर्ष को इस कहानी में क्रमबद्ध किया गया है।

'टेपचु' कहानी में टेपचु नामक मज़दूर को केंद्र में रखकर सामंतवादी और पूँजीवादी सत्ता केन्द्रों के मानवीय शोषण और दमनकारी नीति का पर्दाफाश किया गया है। टेपचु बचपन में ही सामंतवादी शोषण का शिकार हुआ था। उसका असली नाम अल्ला बख्श था। वह अपने जीवन संघर्षों में लगातार पराजित होता जाता है। उसकी लडाई सर्वहारा वर्ग की लडाई है। आम जनता और मज़दूरों के न्यायपूर्ण संघर्ष को अमानवीय ढंग से कुचलनेवाले सत्ता केन्द्रों की हैवानी चेहरे को यह कहानी बेनकाब करती है। वस्तुतः कहानीकार ने टेपचु के माध्यम से सर्वहारा-वर्ग की अजेय शक्ति और अनन्त संघर्ष का ही ऐलान किया है।

'तिरिछ' उदयजी का दूसरा कहानी-संग्रह है जिसमें सात कहानियाँ संगृहीत

हैं। प्रस्तुत संग्रह की 'तिरिछ' नाम की कहानी कहानीकार उदयजी की पहचान है। बदलते जीवन संदर्भ में आधुनिकीकरण और उपभोक्ता संस्कृति के कारण मानवीय संवेदनाएँ पाशविकता के रूप धारण करती हैं। 'तिरिछ' कहानी में इस नीच त्रासदी का चित्रण किया गया है, जो भाव-प्रवण एवं संवेदनशील है।

'तिरिछ' कहानी की रचना कहानीकार ने सन् 1984 में की थी। सन् अस्सी के बाद जो आधुनिकीकरण का दौर शुरू हुआ तज्जन्य नयी संस्कृति फैल गई। दूरदर्शन की प्रतिष्ठा और अन्य अनेक परिवर्तन ने मनुष्य को मानव के मेल-मिलाव से दूर किया। मानव-मानव का सहयोग बन्द हुआ। एक दूसरे को संदेह की दृष्टि से देखने लगा। ऐसी स्थिति में एक अपरिचित आम आदमी दिल्ली आता है, तो उसकी क्या दशा होगी? 'तिरिछ' कहानी इसी चिन्ता से उत्पन्न हुई है।

सन् 1994 में लोकार्पित किया गया कहानी-संग्रह है '..... और अन्त में प्रार्थना।' इसमें चार आत्मकथाएँ, तेरह लघु कथाएँ और दो कहानियाँ संगृहीत हैं। यह प्रस्तुत संग्रह की अन्तिम कहानी है।

'.....और अंत में प्रार्थना' नामक कहानी का मुख्य पात्र डॉ.वाकणकर के माध्यम से भारतीय संस्कृति के तथा कथित संरक्षकों की अन्तरुनी अपसंस्कृति का अनावरण किया गया है। कोतमा में विद्यार्थियों पर पुलिस द्वारा चलायी गयी गोली से मारे गये सामाजिक कार्य-कर्ता रफीक् अहम्मद के

पॉस्टमार्टम के सन्दर्भ में इस अन्तरुनी सच को कहानीकार ने व्यक्त किया है। इस कहानी द्वारा सत्ता का पोल खोलते हुए उसके विरुद्ध अपने विपक्षी स्वर दर्ज किया गया है।

'पॉल गोमरा का स्कूटर' कहानी संग्रह का प्रकाशन सन् 1997 में हुआ, जिसके अन्दर चार कहानियाँ हैं – 'छत्तरियाँ', 'पॉल गोमरा का स्कूटर', 'भाई का सत्याग्रह' और 'वारन रेस्टिंग का साँड'।

'पॉल गोमरा का स्कूटर' नामक लम्बी कहानी नव-उपनिवेशवादी सांस्कृतिक हमले को गहराई से रेखांकित करती है। इसमें पश्चिमी सांस्कृतिक घुसपैठ के फलस्वरूप हमारी ज़िन्दगी और परिवेश में हो रहे विनाशकारी परिवर्तन को संबद्ध किया गया है। पूँजीवादी उपभोगवादी संस्कृति के चंगुल में फंसे हमारे देश की सांस्कृतिक ज़िन्दगी की बेतुकी थडकनें इस कहानी में दर्ज हुई हैं।

संग्रह की अन्तिम और बहुचर्चित लम्बी कहानी है 'वारन हेस्टिंग का साँड'। इस कहानी ने हिन्दी कहानी की संवेदना और शिल्प में क्रान्ति मचा दी। जिस देश में नमक का आन्दोलन हुआ था, वहाँ से उस नमक को भी छीन लिया गया है, बदले में मिल रहा है बहुराष्ट्र कम्पनियों का ऐओडिन नमक। इस मानसिक दासता से मन विचलित हुआ, तो कहानीकार से इस कहानी की रचना की गई। इसमें इतिहास, फैंटसी, मिथक और कला का

मिश्रण हैं। यह कहानी उपनिवेशवीकरण की विकल संस्कृति को समझने की कोशिश है।

'पीली छतरीवाली लड़की' एक सौ पचास से अधिक पन्नोंवाली प्रस्तुत लंबी कहानी राहुल नामक एक गरीब दलित छात्र और उसके साथ पढ़नेवाली अञ्जली नामक सवर्ण जाति की प्रेम कहानी है। कहानी के एक संदर्भ में नायक नायिका से शारीरिक संबन्ध रखता है। और अंत में अञ्जली के बन्धुओं की सत्ता और बाहुबल से डरकर दोनों भाग जाते हैं।

'पीली छतरीवाली लड़की' एक साधारण प्रेम कहानी है। कहानी में प्रेम की स्वाभाविक क्रिया-प्रतिक्रिया है, न बलात्कार, न बदले की भावना। लेकिन इस विषय पर लेखक को समाज के सवर्ण जातियों की निन्दा का शिकार होना पडा।

सन् 2002 में प्रकाशित 'दत्तात्रेय का दुःख' नामक कहानी संग्रह में 16 कहानियाँ संकलित हैं। कहानियों के शीर्षक इस प्रकार हैं– दत्तात्रेय का दुःख, इतिहास और समाज शास्त्र, असत्य का भौतिक प्रमाण, हत्या, दिल्ली, मार्क्स का वाक्य, पूँछ में पटाखा, उत्तर आधुनिकर उपभोक्तावाद, विनायक का अकेलापन, मिलना-जुलना, खराब कलम, श्रीमान भाववादी, आचार्य का रजाई, दिल्ली की दीवार, साईकिल, अरेबा-परेबा।

'मोहनदास' उदयजी की लगभग एक सौ पन्नोंवाली एक लंबी कहानी हैं, जिसकी हिन्दी साहित्य समाज ने दिल खोलकर प्रशंसा की है। 2010 का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त रचना है। अपनी अस्मिता खोकर प्राण रक्षा केलिए विलाप करनेवाले मोहनदास की त्रासदी पाठकों की दिल की कचोट है। प्रेमचन्दजी के बाद दलित पीडितों की एक जबरदस्त वकालत उदयजी के द्वारा की गयी है।

श्री भास्कर राव ने सही कहा है – "उदय जी हिन्दी के एक अकेले कथाकार हैं, जिनकी लम्बी कहानियों ने कुछ समय तक अपने को चर्चा-परिचर्चा के केन्द्र में अवश्य बना रखा है।"[5] 'मोहनदास' कहानी में सरकारी कार्यालयों में व्याप्त भ्रष्टाचार पर भी प्रकाश डाला गया है। स्वतंत्रता के पश्चात् राजनीतिक क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार ने मनुष्य की बाह्य ज़िन्दगी से व्यक्तिगत जीवन तक विषम परिस्थितियों का ऐसा जाल बिछाया है कि वह उससे मुक्त होने केलिए छटपटाने लगता है। इसका जीवन्त चित्रण 'मोहनदास' कहानी के प्राण हैं।

'मैंगोसिल' एक लम्बी कहानी है, औपन्यासिक कहानी है। प्रस्तुत कहानी का कथानक बारह उपशीर्षकों में सानुक्रम बंटा गया है, जिससे कहानी की पठनीयता तीव्र हो जाती है। प्रथम उपशीर्षक का नाम 'प्रलय का प्राक्कथन'

दिया गया है। "असल में यह कहानी का प्राक्कथन है। इसके ज़रिए उदयजी ने कहानी में प्राक्कथन शैली की शुरुआत की है।"[6]

'मैंगोसिल' एक नये रोग का नाम है, जिसमें बच्चे का सिर उसके बाकी शरीर की तुलना में अधिक तेज़ी से बढ़ता है, और उसके मस्तिष्क के व्यवहार अस्वाभाविक हो जाते हैं। कहानी के सूरी का मैंगोसिल एक रूपक या प्रतीक है, जो किसी भी देश के असंतुलित विकास को सूचित करता है। साथ ही जीवन-भार का प्रतीक है, जिससे हर आदमी परेशान है।

'अरेबा-परेबा' एक लम्बी कहानी है, जिसका प्रकाशन 2006 में हुआ। इस कहानी में भी लेखक ने 'मैं' कथावाचक का सहारा लिया है। लेखक ने अपनी जिन्दगी की कुछ घटनाओं का वर्णन किया है, जो उनके साथ बीती गयी थीं।

3.2.3 निबन्ध, आलोचना एवं साक्षात्कारों का संकलन

उदयजी ने कहानी के अतिरिक्त निबन्ध, आलोचना एवं संस्मरण भी लिखे हैं। इन विभागों में कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनका विवरण नीचे दिया जा रहा है–

1. ईश्वर की आँख
2. पिछले दिनों में

3. क्योंकि जीवन एक वाक्य है

4. नयी सदी का पंचतंत्र

5. अपनी उनकी बात

3.2.4 उपन्यास

चीनीबाबा

3.2.5 अनुवाद

उदयजी एक सफल अनुवादक भी हैं। आपने कई भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद किये हैं। उनकी अनूदित रचनाओं की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है।

1. लाल घास पर नीले घोड़े (मिखइल शात्रोव के नाटक के अनुवाद रूपान्तर)
2. कला अनुभव (प्रो.हरियन्ना की सौंदर्यशास्त्रीय पुस्तक का अनुवाद)
3. इंदिरा गाँधी की आखिरी लडाई (बी.बी.सी.संवाददाता मार्क टली-सतीश जेकब की किताब का हिन्दी अनुवाद)
4. रोम्या रोला का भारत (आंशिक अनुवाद और संपादन)
5. चाय से बना सौरा।

3.2.6 फिल्म-टीवी

उदयजी की कई रचनाओं का टेली-फिल्मीकरण हुआ है। आपने दो-तीन सिनिमाओं केलिए पटकथाएँ तैयार की हैं। टेली-फिल्मीकरण हुई उनकी रचनाओं का विशद विवरण नीचे दिये जा रहा है–

1. ताना-बाना
2. बिजली का खज़ाना
3. कृषइ कथा जैसी लिखित-निर्देशित श्रृंखलाएँ
4. वृत्त चित्र (दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल द्वारा प्रकाशित)
5. उपरांत
6. डबल लाइफ
7. हाई वे 39
8. फीचर फिल्मों की पटकथा एवं संवाद
9. 'मोहनदास' कहानी पर फीचर फिल्म

3.2.7 अन्य भाषाओं में अनूदित रचनाएँ

उदयजी की कई रचनाएँ अनूदित होकर भारत की दूसरी भाषाओं तथा अंग्रेज़ी में प्रकाशित हो चुकी हैं। वहाँ उसके दूसरे व तीसरे संस्करण निकल

रहे हैं। उनकी सूची निम्नलिखित है–

1. Short Shorts Long Shots (English)

2. Rage Revelry and Romance (English)

3. A Girl with Golden Parasol (English)

4. Goldene Gruentel (German)

5. पीली छत्तरीवाली लड़की (उर्दू)

6. तिरिछ अणि इतर कथा (मराठी)

7. अरेबा-परेबा (मराठी)

8. मोहनदास (मलयालम, कन्नड, मराठी, उड़िया, पंजाबी, अंग्रेज़ी, उर्दू)

3.2.8 पुरस्कार

समकालीन साहित्य के लोकप्रिय साहित्यकार उदयजी देश-विदेश के कई पुरस्कारों से विभूषित हुए हैं। समकालीन यथार्थ की सशक्त अभिव्यक्ति के परिप्रेक्ष्य में उनसे अलंकृत पुरस्कार ये हैं–

1. भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार - 1980

2. ओमप्रकाश साहित्य सम्मान - 1982

3.	श्रीकांत वर्मा स्मृति पुरस्कार	-	1992
4.	मुक्तिबोध पुरस्कार	-	1995
5.	रामकृष्ण जयदलाल सद्भावना सम्मान	-	1997
6.	साहित्यकार सम्मान	-	1999
7.	पहला सम्मान	-	2003
8.	कथाक्रम सम्मान	-	2005
9.	परिकन सम्मान	-	2006
10.	द्विजदेव सम्मान	-	2006-2007
11.	वनमाली सम्मान	-	2008
12.	सार्क पुरस्कार	-	2009
13.	साहित्य अकादमी पुरस्कार	-	2010
14.	प्रेमचंद सम्मान	-	2012

उदयप्रकाश जी हिन्दी के अस्योत्तर कविता के अग्रणी कवि तथा प्रतिष्ठित कथाकार हैं। उन्होंने कहानी के वस्तु एवं शिल्प दोनों में 'जादुई चमत्कार' दिखाया है। हिन्दी में जुदुई यथार्थवाद (Magical realism) की

शुरूआत उन्होंने की। प्रेमचन्दजी और नयी कहानी साहित्य की तकदीर बदलने की सफल कोशिश उदयजी के ज़रिए की गई है। उदयप्रकाश जनवादी साहित्यकार हैं। कहानी, कविता और अन्य सारी रचनाएँ उनकी सच्ची प्रतिबद्धता और भारतीय साहित्य की राष्ट्रीय विरासत के मिसाल हैं।

3.2.9 यात्राएँ

यात्राएँ	-	2012	अमेरिका
		2004	जर्मनी
		2006	फ्रैंकफर्ट (जर्मनी)
		2003	नेदर लैण्ड
		2007	न्यूयोर्क (अमेरिका)
		2008	इटली
		2008	सउथ कोरिया
		2012	ऑस्ट्रेलिया

संदर्भ ग्रंथ

1. गंगा प्रसाद पाण्डेय : महाप्राण निराला, पृ.सं. 283

2. उदयप्रकाश - अपनी उनकी बात - पृ.सं. 45

3. उदयप्रकाश - कवि ने कहा - पृ.सं.5

4. डॉ.रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी का गद्य साहित्य, पृ.सं. 327

5. सी.भास्कर राव, जमशेद पुर : हंस पत्रिका, अक्तूबर - 2005

6. संग्रथन : अगस्त 2010, पृ.सं.36

अध्याय - चार

उदय प्रकाश की कहानियों के पात्र

अध्याय - 4

उदय प्रकाश की कहानियों के पात्र

नाटकों के समान कथा साहित्य में भी पात्र और चरित्र चित्रण की भूमिका महत्वपूर्ण है। इन रचनाओं की पूरी सफलता पात्रों की सजीवता तथा उनकी वास्तविकता पर ही निर्भर रहती है। इसलिए हर एक लेखक अपने पात्रों को सजीव और स्वाभाविक बनाने का परिश्रम करते हैं। चरित्र चित्रण के बिना वातावरण निर्माण या घटना चातुर्य से मानव जीवन के व्यापक और यथार्थ रूप का चित्रण नहीं कर सकते। नाटक में तो पात्रों का व्यक्तित्व अनके संवादों एवं अभिनय द्वारा प्रस्तुत किया जाता है लेकिन कथा साहित्य में, विशेष कर कहानियों में संवाद बहुत कम ही होतो हैं और पात्रों का व्यक्तित्व तो कहानीकार के विवरणों से ही विकसित होता है। कथावस्तु की आवश्यकता और उपयोगिता के अनुसार कहानीकार पात्रों का चरित्र चित्रण करते हैं। इस संदर्भ में श्री जैनेन्द्र की यह कथन उल्लेखनीय है –"एक कथा की, पात्र की या व्यक्तित्व की निजता में जितना गहरा और गंभीर विरोध समा सकता है उतना ही उसका महत्व।"[1]

चरित्र चित्रण की सफलता कहानीकार के जीवनानुभवों पर निर्भर रहता है। ये अनुभव ही पात्रों के कार्य-व्यापारों को सजीवता और यथार्थता प्रदान

करते हैं। उदय प्रकाश समकालीन हिन्दी साहित्य के सशक्त कहानीकार हैं। उन्हें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का व्यापक अनुभव प्राप्त है। आम आदमी के जीवन को निकटता से देखने, समझने का अवसर उन्हें प्राप्त हुआ है। श्री विजय बहादुर सिंह ने ठीक ही कहा है –"उदय का समस्त लेखन वस्तुतः आम आदमी या साधारण मनुष्य की प्रतिष्ठा केलिए संघर्षकर रहा है। वह जो क्षुब्ध, दुःखी और परेशान तो है पर घुटने टेकने या परास्त हो जाने को राजी नहीं।"[2]

उदय प्रकाश की कहानियों के पात्रों के संबंध में डॉ.कैलाश चन्द्र ने कहा है – "उदय प्रकाश की कहानियों के पात्र कहीं बाहर से आयानीत नहीं है। वे पात्र खाते-पीते घरों के पात्र नहीं हैं, और न उनके पात्रों में विलक्षणता और विशिष्टता पायी जाती है कि वे अविश्वसनीय लगने लगें अथवा गढे हुए लगें। दरअसल उनके पात्र नाटकीय हो चुके या हो रहे रोज़मार्ग के जीवन से उठाये गए पात्र होते हैं।"[3]

ऐसे पात्रों और उनकी परिस्थितियों का यथार्थ वर्णन पूरी प्रामाणिकता के साथ करना हरेक लेखक के वश की बात नहीं होती। यह किसी भी लेखक केलिए एक चुनौती हो सकती है। उदय प्रकाश ने तो अपने निजी जीवन में और कहानी की प्रासंगिकता के विषय में हमेशा चुनौतियों का सामना किया है।

".....और अंत में प्रार्थना का डॉ.वाकणकर ईमानदारी एवं नैतिकता का प्रतीक है। उनपर झूठी पोस्टमार्टम रिपोर्ट लिखने का दबाब डाल जाता है। लेकिन सत्य पर अटल होकर वे एस.पी.के सामने सच्चा रिपोर्ट लिखता है। लेकिन वर्तमान राजनैतिक तनाव के कारण उच्च रक्त चाप के रोगी डॉ.वाकणकर मानसिक उत्पीडन से गुज़रते हैं तथा ब्रेन हेमरेज़ के शिकार होकर 'कोमा' में पड जाते हैं। यह सच की कीमत है सच की जीत भी।

'मैंगोसिल' कहानी का प्रारंभ चन्द्रकान्त थोराट के अत्यंत मामूली और नगण्य जीवन से होता है। वह उत्पीडन से कुचले और मिटाये गए लाखों लोगों में से एक है। कहानी पढने पर ऐसे लगता है मानों थोराट और कहानीकार अलग अलग व्यक्ति नहीं है, उपेक्षा और उत्पीडन के स्तर पर दोनों एक ही स्तर पर हैं। वह कहानी के साथ अपने पात्रों के नक्शे से कदम बढ़ाकर चलता है। लेखक का जुडाव उस गरीब, तिरस्कृत और बेसहारा आदमी के साथ दिखाई देता है। कहानी में मैंगोसिल नामक लाइलाज रोग का वर्णन है। साथ ही साथ थोराट की पत्नी शोभा के जीवन की त्रासदी का भी चित्रण है। उसकी पहली शादी रमाशंकर से हुई थी जो पत्नी को दोस्तों के लिए पेश करता है। तंग आकर वह थोराट के साथ दिल्ली भाग आती है। दिल्ली के अवैध बस्तियों में रहनेवालों की मज़बूरियों एवं विवशताओं का जो

चित्रण कहानीकार ने किया है, अन्यत्र दुर्लभ है। उदय प्रकाश के पात्र जिन्दगी जीते ही नहीं बल्कि जिन्दगी की ललक पैदा करते हैं। उनके लेखन में इसलिए कहीं निराशा का स्वर नहीं है। उनके सारे पात्रों में जिजीविषा पायी जाती है। सात बार गर्भधारण करने पर भी उसकी कोख निष्फल हुई लेकिन प्रार्थना के फलस्वरूप बुढापे की ओर कदम बढाती शोभा गर्भवती हुई और बच्चे को जन्म दिया । वे उस बच्चे को प्यार से सूरी पुकारने लगे। लेकिन सूरी को मैंगोसिल की बीमारी हो गई।

कहानी में सूरी का आत्मसंघर्ष, उसकी गहन पीडा सब भूमण्डलीय पूँजीवाद के खेल में अप्रासंगिक कर दिये गए। लेकिन चंद्रकांत और शोभा के संघर्ष सूरी के निजी संघर्षों के साथ मिलकर बहिष्कृत जन समूह का संघर्ष बन जाता है। उदय प्रकाश आम आदमी का पक्षघर है। अपनी हर कहानी में वे उसी के प्रवक्ता हैं। सामाजिक स्थितियों के अनुकूल पात्र सृष्टि उदयप्रकाश की बडी खूबी है।

'पॉल गोमरा का स्कूटर' कहानी ऐसे समय में प्रकाशित हुई जब हमारे देश में बाजारीकरण को खुले तौर पर स्वीकार करने लगा था। एक सचेत कहानीकार होने के कारण उदय प्रकाश ने पॉल गोमरा के स्कूटर के माध्यम से इस खतरनाक स्थिति की ओर 1995 में संकेत किया कि कैसे बाज़ार

आदमी के घर के अंदर घुसकर उसे बेचैन करता है, उसके जीवन को तबाह करता है। उसे सुख का आभास दिलाकर उनकी मेहनत का पैसा हडप लेता है। पॉल गोमरा का यथार्थ आज का यथार्थ है। बाज़ारवाद के चंगुल में पडकर तडपने वाला हर व्यक्ति पॉल गोमरा ही है।

'मोहनदास' कहानी का नायक मोहनदास पाठकों के मन में अमिट छाप छोडनेवाला पात्र है। निम्न जाति के गरीब होते हुए भी ऊँची श्रेणी में उच्च शिक्षा प्राप्त करके वह नौकरी को प्राप्त करता है पर नियुक्ति नहीं मिलती है। लेकिन उसके स्थान पर पूँजीपति का बेटा बिसनाथ मोहनदास बनकर नौकरी छीन लेता है। अपने को असली मोहनदास साबित करने के प्रयत्न में वह पराजित हो जाता है। नौकरशाही, राजनीति एवं गुण्डागर्दी के संयुक्त षड़यंत्र का वह शिकार बन जाता है। अंत में अपने प्राणों की रक्षा केलिए वह अपनी अस्मिता का तर्पण करता है। सर्वहारा वर्ग के प्रतीक के रूप में मोहनदास का चित्रण हुआ है। समकालीन भारत की राजनीति अपराधियों एवं गुण्डों से भरा हुआ है। पैसा ही परमेश्वर हो गया है। इन्क्वयरी कमीशन के द्वारा सरकार ढोंग का सहारा लेती है। अपने ही आदमी को कमीशन नियुक्त करके न्याय एवं सत्य का गला घोंट दिया जाता है।

इस दृष्टि से मोहनदास बेसहारा वर्ग का प्रतिनिधि है। समाज सेवा के

नाम पर अपनी जेब भरने वालों का पर्दाफाश करना कहानीकार का लक्ष्य है।

'दिल्ली की दीवार' में रामनिवास दिल्ली के एक सफाईवाले की कहानी है। अभाव में जीवन बितानेवाला रामनिवास अमीर बन जाता है और सुखमय जीवन का मज़ा लूटता है। लेकिन अचानक वह एक दिन अप्रत्यक्ष हो जाता है। फिर तभी लौट नहीं आता। उसके तिरोधान की तलाश के द्वारा कहानी पाठकों को नया अनुभव प्रदान करती है। दिल्ली जैसे महानगर की गलियों के जीवन को प्रस्तुत करनेवाली यह कहानी महानगरीय विसंगतियों का यथार्थ चित्र भी प्रस्तुत करती है। अंडा बेचनेवाली राजवती, मूँगफली बेचने वाली सोमाली, चरस बेचनेवाला मुश्ताक, वेश्यावृत्ति का धंधा करनेवाली सलीमन, बंधुजनों से तिरस्कृत रमैकी आदि पात्रों के द्वारा कहानीकार ने दिल्ली के ऊपरी परिवेश की दीवारों को तोडकर निरालंब जनता के नाटकीय जीवन का दृश्य प्रस्तुत किया है। यह काला धन पर लिखित प्रथम हिन्दी कहनी है। रामनिवास सफाई करने जिस कोठी के भीतर पहुँचता है उसकी दीवार के भीतर नोटों के असंख्य बंडल याने काला धन सुरक्षित रखा गया था। 'दिल्ली की दीवार' काला धन पर आधारित कहानी है। रामनिवास नामक सफाई वाला सफाई करने के लिए एक कोठी में पहुँच जाता है। उसके दीवार के भीतर नोटों के अनेक बंडल रूपी कालाधन सुरक्षित रखे गये थे जो शासकों,

जन नेताओं और सरकारी अफ़सरों के थे। इस धन से रामनिवास अमीर बन जाता है और अपनी प्रेमिका सुमन होटल के कमरे से पकडा जाता है। धन के रहस्य तो छुपाने के लिए रामनिवास की हत्या करना सत्ताधारियों की आवश्यकता बन गई। आतंकवादी बनाके पुलीस ने गोली मारकर उसकी हत्या की। दूसरे दिन समाचार पत्रों में खबर आयी कि वे आतंकवादी पकडे गए और मारे गए उनसे लाखों रुपए बरामद हुए। इस काले धन से रामविनास अमीर बन गया था।

'तिरिछ' कहानी के पिता भी पाठकों के मन को आकर्षित करनावाला पात्र है। वे एक ऐसे पिता हैं जो परिवार के लिए सुरक्षित दुर्ग की तरह है और पूरा परिवार उनपर गर्व करते हैं। लेकिन जीवन में कुछ घटनाएँ या दुर्घटनाएँ ऐसी होती हैं कि सममानित व्यक्ति को भी अपमान और तिरस्कार के भयावह दौर से गुज़रना पडता है। पिता के लिए पुत्र की बेचैनी का वर्णन भी कहानीकार ने बडी मार्मिकता से किया है। अत्याधुनिकता के समकालीन परिवेश ने मानवीय संवेदनाओं को कितना ह्रास किया है, यह कहानी इस सच्चाई की ओर इशारा करती है। उस बूढे पिता पर फेंके हुए पत्थर, वास्तव में हमारे परंपरागत मानवीय मूल्यों पर विकृत आधुनिकता द्वारा फेंके गए पत्थर हैं।

हमारे देश के कितने ही थानों में पुलीस की क्रूरता और अमानवीय व्यवहारों का शिकार होकर निरीह मनुष्य मर जाते हैं या मार दिये जाते हैं! 'टेपचु' कहानी का टेपचु इसका उत्तम उदाहरण है। अपने कारखाने के मज़दूर संघ का नेता बनने पर वह मिल के मालिक का शत्रु बन जाता है। वह मालिक और पुलीस के अन्यायों का विरोध करता है। इस अपराध में पुलीस उसे पकड लेती है, पीट पीटकर पुलीस जीप के पीछे रस्सी के बाँध कर खसीटता है। मृतप्राय उस बेचारे को अंत में गोली मारकर पुलीस ने हत्या की। टेपचु के समान पाठकों के हृदय को छू लेनेवाला पात्र है 'रुक्कु' कहानी का रुक्कु। लेखक के ही घर की नौकरानी माया का छोटा बच्चा था वह। लेखक को भी वह बहुत प्यारा था। लेकिन नियति की क्रूरता के फलस्वरूप सडक पर हुई दुर्घटना में रुक्कु की मौत हो जाती है। लेखक को वह चिडिया जैसा लगता था। और वे कहते हैं – "कहानीकार यहीं छोटे-बड़े का भेदभाव नकारते हुए बच्चों की आँखों में एक ऐसे दिव्य भाव का दिग्दर्शन करते हैं जो उनके बड़ा होने पर कहीं लुप्त हो जाता है।" "..... मैं ने देखा; उनकी आँखें सचमुच किसी चिड़िया की आँखों जैसी थीं। बाद में बड़ा होने पर, बच्चे ये आँखें कहीं खो देते हैं?"[4] इसी प्रकार आज के वातावरण पर उदय प्रकाश जी की यह टिप्पणि कितना सारगर्भित है – "बहुत देर तक उड़ा करता हूँ मैं रात में। यह भी किसी को नहीं पता। यही सारी वजहें हैं कि लोग

मुझे मार नहीं पाते। वरना तो आप जानते हैं कि आज के वक्त किसी का जी पाना, वह भी चिड़िया बनकर, वह भी भारत की राजधानी दिल्ली में, कितना कठिन है।"[5] कदाचित उक्त टिप्पणी भारत की वर्तमान दशा का यथार्थ वर्णन करती है जहाँ किसी सीधे-साधे इन्सान का शान्ति से जीना दूभर हो चला है।

'छप्पन तोले का करधन' की बूढी दादी भी उत्तराधुनिकता की अमानवीयता का शिकार है। धन के लालच में परिवारवालों से उपेक्षित होनेवाली दादी उत्तराधुनिक युग में पारिवारिक संबंधों में आए परिवर्तन पर गहरी चोट है। 'मातृदेवो भव' की संस्कृति से हमारा पतन हो गया है। 'छप्पन तोले का करधन' में बूढी दादी हमें एक ऐसी माँ की याद दिलाती है जो परिवार के पालन पोषण के लिए मेहनत करके भी जीवन के अन्तिम क्षणों में सबसे उपेक्षित हो जाती है।

'नेलकटर' उदय प्रकास द्वारा अपनी ही माँ पर लिखी कहानी है। यह दुनिया की रीति है कि कुछ व्यक्तियों के मर जाने के बाद हम उन्हें उन चीज़ों से याद करते हैं जो अंतिम समय में उनसे जुडी रहती है। इस कहानी में नेलकटर भी इसी प्रकार की एक वस्तु है जिसे पिताजी कुंभमेला से लाये थे। बोलने में असमर्थ माँ की व्यथा को एक मासूम बच्चे की तरह कहानीकार ने व्यक्त किया है। पूरी कहानी में तीन जगहों में स्वयं उदय प्रकाश ही है और

बाकी जगहों तो वह बच्चा ही रहता है जो हमें कहानी सुनाता है। 'अपराध' नामक कहानी में उदय प्रकाश ने दो भाइयों के आपसी प्रेम की मार्मिक कथा कही है। बडे भाई हमेशा छोटे भाई के साथ रहता है और उसे बहुत प्यार करता है। एक दिन खेल में बडे ने छोटे की उपेक्षा की और छोटे के सिर में किसी प्रकार चोट लगी। छोटे ने गुस्से में माँ को बताया कि बडे भाई ने मारा है। इस पर पिता बडे भाई को बुरी तरह पीटता है। तब भी छोटा भाई सच नहीं बोलता है। वर्षों बाद छोटा भाई इस अपराध केलिए माफी माँगना चाहता है लेकिन बडे भाई को इस घटना की याद ही नहीं है। उत्तराधुनिकता के युग में भी मनुष्य के मन में सत्य और अपराध बोध पूर्ण रूप से नष्ट नहीं हुआ है।

'भाई का सत्याग्रह' कहानी का भाई अन्याय के विरुद्ध गाँधीजी के अहिंसा सिद्धान्त पर आधारित, विश्व में मान्यता प्राप्त सत्याग्रह का सहारा लेता है। पर हमारी पुलीस के सामने उनके पैरों के ऊपर गाडी चलायी जाती है। पुलीस भाई पर न्याय न करके गुण्डों का साथ देती है। उदय प्रकाश की कहानियों के पात्रों के सम्बन्ध में दिनेश जी का कहना है – "मुझे लगता है ये चरित्र रेयरेस्ट ऑफ रेयर हैं। एक तरफ से दुर्लभ।"[6] उदय प्रकाश की कहानियों के पात्रों की विशेषता और विशिष्टता का परिचय देते हुए प्रसिद्ध

फिल्मी अभिनेता श्री इरफान खान ने कहा है – "अगर मैं उदय जी की कहानियों के पात्रों को निबाह सकूँ तो अपना जीवन धन्य मानूँगा..... काम करने केलिए कलाकार रोल करता है लेकिन कलाकार के मन में ऐसे कई चरित्र रहते हैं जिसे वो निबाहना चाहता है..... तो मेरी यह दिली इच्छा है कि मैं उदय जी की कहानियों के पात्रों को दर्शकों के सामने रखूँ और बताऊँ कि देखो ..... तो दरअसल जिन्दगी है और इसे हर किसी को इसी रूप में देखना चाहिए.....।"[7] इस प्रकार उदय प्रकाश की कहानियों के सारे पात्र उत्तराधुनिक विकृत परिस्थितियों के प्रतिनिधि बनकर पाठकों के मन में प्रतिष्ठित हो जाते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. जैनेन्द्रकुमार-साहित्य का श्रेय और प्रेय - पृ.सं.165
2. विजय बहादुरसिंह -शीतलवाणी अगस्त-अक्तूबर - 2012 - पृ.सं.8
3. कैलाश चन्द्र - शीतलवाणी -अगस्त-अक्तूबर - पृ.सं 27
4. उदयप्रकाश - रुक्कु - संग्रथन - दिसंबर 2010 - पृ.सं.16
5. वही - पृ.सं.18
6. दिनेश - शीतलवाणी -अगस्त-अक्तूबर - पृ.सं 24
7. इरफान खान - शीतलवाणी -अगस्त-अक्तूबर - पृ.सं.38

अध्याय - पाँच

उदय प्रकाश की कहानियों में समकालीन समाज का चित्रण

अध्याय - 5

उदय प्रकाश की कहानियों में समकालीन समाज का चित्रण

उदय प्रकाश समकालीन हिन्दी कहानी साहित्य के महान कहानीकार हैं। जब भारत उत्तराधुनिक वैश्विक संस्कृति के चंगुल में तडप रहा था, तभी उनकी कहानियाँ प्रकाशित हुईं। बाज़ारवादी एवं विज्ञापनबाजी उपभोक्ता संस्कृति ने पूरे देश को अपने मायाजाल में फँसा दिया है। मोबाइल, इन्टरनेट, लापटाप, पेन्ड्रैव आदि मेट्रो संस्कृति की देन है। इसमें दबकर हमारे पुराने जीवन मूल्य मृतप्राय हो गए। उदय प्रकाश की कहानियों में इन्हीं विषम परिस्थितियों का चित्रण है। दरियाई घोडा, तिरिछ और अंत में प्रार्थना, पॉल गोमरा का स्कूटर, पीली छतरीवाली लडकी, दात्तात्रेय का दुःख, अरेबा-परेबा, मैंगोसिल आदि कहानियों में नवीनता की झलक दिखाई पडती है। इसी के कारण उन्हें हिन्दी कहानी की नवीनता के प्रतिष्ठापक मान सकते हैं।

उदय प्रकाश की अधिकांश कहानियों का विषय समकालीन सामाजिक जीवन से संबंध रखनेवाले हैं। मुख्य प्रतिपाद्य उत्तराधुनिक भूमण्डलीकरण से उत्पन्न विकल मानसिकता और उसका विरोध है।

5.1 तिरिछ

'तिरिछ' उदय प्रकाश की प्रारंभिक कहानी संकलन है जिसमें नौ कहानियाँ संकलित है। इसमें भूमण्डलीकृत अमानवीयता का चित्रण है। तिरिछ संकलन की चौथी कहानी है। 'वसुधैव कुटुम्बकमं' के आदर्श पर जीवन बिताने वाले भारत में बुजुर्ग वर्ग वर्तमान भूमण्डलीकृत ग्लोबल व्यवहार में पीड़ा का अनुभव करते हैं। तिरिछ पचपन साल के एक पिताजी (राम प्रसाद) की कथा है। एक दिन शाम को उसे तिरिछ ने काटा। कहानीकार के ही शब्दों तिरिछ ने काटा। कहानीकार के ही शब्दों में –

लेकिन उस दिन, शाम को, जब पिताजी बाहर से टहलकर आये तो उनके टक्कने में पट्टी बँधी थी। थोड़ी देर में गाँव के कई लोग वहाँ आ गये। पता चला कि पिताजी को जंगल में तिरिछ (विषखापर, एक ज़हरीला लिजार्ड) ने काट लिया है।

कहानीकार के शब्दों में - "हम सब जानते थे कि तिरिछ के काटने पर आदमी बच ही नहीं सकता। रात में, लालटेन की धुँधली-मटैली रौशनी में गाँव के बहुत से लोग हमारे आँगन में जमा हो गये थे। पिताजी उनके बीच थे, ज़मीन पर बैठे हुए। फिर पास के गाँव का चुटुआ नाई भी आया। वह अरंड के पत्ते और कंडे की राख से ज़हर उतारता था।"[1]

तिरिछ से काटे हुए और होश उड़कर आनेवाले बुजुर्ग को बडे बडे

लोग बाहर निकाल देते हैं। बाहर उसपर पथराव होता है क्यों कि वह ग्रामीण उनको पाकिस्तानी जासूस सा लग रहा था। बुद्धिजीवी कहे जानेवाले लोग निसंग देखते रहे। कहानीकार का मत है कि उत्तराधुनिक मनोवृत्तियों ने मानवीय संवेदनाओं को जड सा बना दिया है।

वास्तव में यह कहानी गाँव के एक नेक बुजुर्ग आदमी की कहानी है जो सुबह दस बजे शुरू होकर सायं छः बजे उस आदमी की मृत्यु पर समाप्त होती है। वह शहर की अदालत में पेशी के लिए आता है और भ्रमित सा कि वह सपने में हैं, शहर की क्रूरता के कारण मारा जाता है। मोटे रूप में पूरी कहानी एक आदमी की मृत्यु यात्रा की कथा है। डर को एक रचनात्मक शक्ति कहानी में मिलती है। यह वह डर है जो हमारे सामाजिक जीवन सन्दर्भों से सीधे जुडा है। एक प्रकार से देखे तो कहानी में मृत्यु एक कमोडिटी की तरह इस्तेमाल हुई है। कहानी का वह बुजुर्ग पिता जिस तरह जगह-जगह अपमानित होता है और मार खाता है, आम आदमी के साथ उनकी प्रतिदिन की ज़िन्दगी में यही सब सो हो रहा है। वह जिस तरह समझता है कि यह सब जो घट रहा है स्वप्न में घट रहा है और जैसे ही वह जाएगा सब कुछ ठीक होने का भ्रम आम भारतीय भी पालते हैं जो वास्तविक नहीं है। गाँव के मेलजोल वाली सादगी की तुलना में शहर की निष्करुणता और संवेदनशून्यता एकदम नंगे रूप से कहानी में प्रकट हुई हैं। शहर में तो गाँव के आदमी की पहचान ही गायब हो जाती है। उदय

प्रकाश ने अपनी कहानी में स्वप्न और यथार्थ को परस्पर पूरक रूप में रखकर बुनावट की है। कहानी एक दारुण नियति को लेकर अनायास विकसित हो जाती है। सब व्यवस्था से बंधे हैं, छूटने की कोई गुंजाइस नहीं है। जो घट रहा है उसमें आदमी की विवशता के बार-बार दर्शन होते हैं। इस प्रकार तिरिछ कहानी मानवीय विवशताओं की भी एक बडी कहानी बन गई है। यह कहानी मनुष्य को उसकी अस्मितागत पराधीनता में क्षत-विक्षत और लहूलुहान करती है।

समकालीन समाज के आगे हत्या का दृश्य भी मनोरंजन का विषय बन गया। उस बूढे पर फेंके गए पत्थर हमारे सांस्कृतिक मूल्यों पर फेंके गए पत्थर है। मरा हुआ वह ग्रामीण मनुष्य भारत के मरे हुए अतीत का संस्कार है।

5.2 पॉल गोमरा का स्कूटर

'पॉल गोमरा का स्कूटर' भूमण्डलीकृत उपभोक्ता संस्कार का, आम आदमी के टूटे हुए अपनापन और विचित्र मनोविकारों का आख्यान है। दिल्ली का एक छोटा कवि राम गोपाल ने बाज़ारवादी संस्कृति के लालच में पडकर, उपभोक्ता संस्कृति के विज्ञापनों एवं बाजीगरी में आकृष्ट होकर अपने आपको बदलने का प्रयत्न किया। अपने नाम का बिखंडन करके आगे-पीछे बदलकर उत्तराधुनिक 'पॉल गोमरा' नाम स्वीकार किया। स्कूटर खरीदने की इच्छा से स्कूटर खरीदी। स्कूटर खरीदने के बारे में कहानीकार

कथन है –"स्कूटर खरीदने के उनके निर्णय की पृष्ठभूमि में उनकी काल-गणना का भी हाथ था, जिसे अपने जीवन से जोड़कर पॉल गोमरा डर गए थे। गाजियाबाद से आइ.टी.ओ. पुल तक पहुँचने मं उन्हें दो घंटे लगते थे। इतना ही वक्त उन्हें लौटने में लगता था यानी प्रत्येक चौबीस में चार घंटे उन्हें राज्य परिवहन के उस बस में, ठसाठस अजनबी मानव शरीरों के दबाव, पसीने और वायु विकार की दुस्सह गंध के बीच गुजारने पड़ते थे।"[1] स्कूटर चलाना उसे आता नहीं था। अतः मित्र के पीछे बैठकर अपने स्कूटर में यात्रा की। कहानीकार के शब्दों में – "इस बीच पॉल गोमरा की पहचान राजीव मेनन से हो गई। वह कोचीन के निकट के एक कस्बे उदयम्पेरूर का रहनेवाला था और राज्य परिवहन की उसी बस में रोजाना गाजियाबाद से दिल्ली जाता था। वह आइ.टी.ओ. पुल के पास ही मयूर भवन में पेस्टिसाइड्स की एक कंपनी में अकाउंट का काम करता था।"[2] काले-कलूटे, दुबले-पतले दाढ़ीवाले हँसमुख राजीव मेनन ने पॉल गोमरा का यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया कि बस से आने की जगह वे अब स्कूटर से ही दफ्तर आया-जाया करेंगे। राजीव स्कूटर चलाता था, पॉल गोमरा स्कूटर की पिछली सीट पर बैठे बैठे अल्लामा इकबाल का गीत गा रहे थे कि एक्सीडेन्ट हुआ।

स्कूटर चलाएगा राजीव मेनन और पिछली सीट पर बैठे होंगे उसके स्वामी स्वामी हिंदी कवि पॉल गोमरा। अचानक यात्रा के बीच हुई दुर्घटना

में मित्र की मृत्यु हुई। पॉल गोमरा को सिर पर मामूली चोट हुई। इस अपराध बोध से प्रताडित कवि दिल्ली की गलियों में पागल सा भटकता रहा। स्कूटर का मोह उसे घातक साबित होता है। उदय प्रकाश के ही शब्दों में – "पॉस गोमरा का स्कूटर ज़रूर अभी भी, शांतिवन के पास, दरियागंज की ट्रैफिक कोतवाली के पिछवाड़े मुड़ी-तुड़ी हालत में पड़ा हुआ है। उस टूटे-फूटे, दुर्घटनाग्रस्त स्कूटर पर मृतक राजीव मेनन और विक्षिप्त पॉल गोमरा के खून के धब्बे हैं, जो सूखकर काले पड़ चुके हैं।"[3]

विज्ञापनों में सुन्दरियों के ग्लैमर के उन्माद में रामगोपाल को अपनी पत्नी मशहूर मॉडल मेहर अस्सिया सी प्रतीत होती है। इस उत्तराधुनिक उन्माद के जाल में उलझकर रामगोपाल अपने को बदल देता है। विज्ञापन के बुरे असर के बारे में कहानीकार कहते हैं – "इस विज्ञापन की, राष्ट्रीय स्तर पर मीडिया विशेषज्ञों और अन्य बौद्धिकों के बीच बहुत चर्चा हुई थी। लेकिन इस विज्ञापन को बनानेवाली 'एड कंपनी' ने दावा किया था कि आशा मिश्रा के अंडरबियर से निकलती हुई बियर की बोतल का शॉट और छाती में बियर उलटते ही आशा मिश्रा के स्तनों का झाग में रूपांतरण इतना प्रभावशाली है कि इससे इस नए ब्रांड की मार्केटिंग का टेकऑफ ही जबरदस्त होगा। इस विज्ञापन के प्रिव्यू सर्वे के दौरान कंपनी ने पाया था कि बीस सेकंड के इस विज्ञापन को देखते हुए हर दस में से सात पुरुषों ने, जिनका आयु वर्ग 15 से 60 वर्ष का था, 'मास्टरबेट' की इच्छा का प्रभाव स्वीकार किया था।

इस तरह स्पेन के प्रसिद्ध अति-यथार्थवादी चित्रकार सल्वादोर दाली की घड़ियों की तरह घोड़े की पीठ पर बैठी आशा मिश्रा पिघलकर बियर का फेन बन गई थी और अपने समय की सामूहिक चेतना में चुपचाप प्रवाहित हो गई थी। परिणाम यह कि हर एक करोड़ में से सत्तर लाख दर्शकों ने 'सेक्स की फीलिंग' अपने भीतर पाई थी और 'द ब्लैक हॉर्स' बियर अनुमानित लक्ष्य से 27 प्रतिशत ज्यादा बिक्री दर्ज करा गई थी। रामगोपाल से पॉल गोमरा की यह त्रासदी उत्तराधुनिक संस्कार में फँसने की त्रासदी है।"[4]

5.3 वारन होस्टिंग्स का सांड

'वारन होस्टिंग्स का सांड' उदय प्रकाश की अत्यंत निराली कहानी है। वारन होस्टिंग्स के इतिहास से संबाधित सत्य, अर्द्ध सत्य एवं असत्य घटनायें कथावस्तु बनती हैं। कहानीकार के शब्दों में –"इस कहानी में इतिहास उतना ही है जितना दाल में नमक होता है। अगर आप इसमें इतिहास खोजने की कोशिश करेंगे तो आपके हाथ में रेत का दूह या कनेर की टहनी भर आएगी।

असल में जब इतिहास में स्वप्न, यथार्थ में कल्पना, तथ्य में फेंटेसी और अतीत में भविष्य को मिलाया जाता है तो आख्यान में लीला शुरू होती है और एक ऐसी माया का जन्म होता है जिसका साक्षात्कार सत्य की

खोज की ओर की एक यात्रा ही है। इसीलिए हर लीला और प्रत्येक माया उतनी ही सच होती है, जितना स्वयं इतिहास।"[5]

उन्होंने उस पर नव औपनिवेशिक विलक्षणताओं को फैन्टसी और जादू के ताने-बाने से बुनने का प्रयास किया है। उपनिवेश संस्कार के स्वरूप एवं प्रकृति का चित्रण इसमें हुआ है। अंग्रेज़ों ने औपनिवेशिक शासन द्वारा अपनी संहार-वृत्ति को स्पष्ट किया था। अंग्रेज़ों के चले जाने के बाद भी औपनिवेशिक संस्कार बढ गए। मल्टी नाशनल कंपनियों ने देश का कब्जा किया और वे नए नए बाज़ार खोले जा रहे हैं। वे हमें लूटते हैं और हम उसके शिकार बनकर रह जाते हैं। यही नव उपनिवेशवाद या नया साम्राज्यवाद है। गुलाम देश की संस्कृति का विनाश करना औपनिवेशिक मनोरंजन है। स्वतंत्र भारत की युवा पीढ़ी के लिए हिन्दी भाषा वर्जनीय है और अंग्रेज़ी अर्जनीय । स्वदेशी वेश-भूषा और खान-पान का तिरस्कार करके और विदेशी वेश-भूषा और खान-पान का नमस्कार करते हैं। प्रस्तुत कहानी इस ऐतिहासिक सत्य का उद्घाटन करती है। कहानीकार ने क्रुद्ध सांड के सहारे साम्राज्यवाद पर अपनी क्षुब्ध भावनाओं को प्रकट किया है और कहा "वह साँड अभी मरा नहीं है।"[6] कहानी के अंत में वारन होस्टिंग्स का साण्ड विघातक हो जाता है तो उसे जंजीरों से बाँध लिया जाना है जिससे औपनिवेश के विरोधी स्वर समाप्त हो जाए। लेकिन वारन होस्टिंग्स का सांड जंजीर तोडता है और उपनिवेशक होस्टिंग्स पर हमला

करता है। वास्तव में यह कहानी भूमंडलीकृत वर्तमान नव साम्राज्यवाद के खिलाफ लेखक का बौद्धिक हमला है।

'वारन हेस्टिंग्स का साँड' कहानी उदय प्रकाश की कहानियों के विशेष संदर्भ में भारतीय समाज का अध्ययन सबसे पहले 1997 में इण्डिया टुडे के साहित्य वार्षिकी विशेषांक में छपी थी।

वारन हेस्टिंग्स हिन्दुस्तान का पहला गवर्न जनरल था। इस कहानी में उनको मुख्य पात्र बनाकर औपनिवेशक प्रक्रिया को साकार किया गया है। वह मात्र व्यक्ति नहीं, सत्ता का प्रतिनिधि है। वह हिन्दुस्तान की संस्कृति से अभिभूत भी है और आतंकित भी। कहानी का सारा चित्रण हमें उपनिवेशवाद की प्रक्रिया को परखने का मौका देता है। उसने भारतीय भाषायें सीखीं, भगवतगीता का अनुवाद कराया और भारत का पहला नक्शा बनाया। यह सब उपनिवेशवादी जडों को मज़बूत करने की साजिश थी। आधुनिकता की दुहाई देता हुआ उपनिवेशवाद को बर्करार रखा। अंग्रेज़ों के साथ साथ कुछ स्वार्थ प्रेरित हिन्दुस्तानी भी थे, जिन्होंने इस शोषण का साथ दिया। वे हिन्दुस्तान की लूट में अंग्रेज़ों के भागीदार बने।

कहानी का सब से विवादास्पद प्रतीक है गाय और साँड। यूरोप में गाय-बैलों को 'कैटिल' कहा जाता है तो भारत में उनकी पूजा होती है। इंग्लैंड के औद्योगिक समाज केलिए वह मात्र पशु था क्योंकि औद्योगिकरण पश्चिम के मानवीय समाज को अमानवीय बना रहा था। पर भारतीय

समाज में वे परिवार के जीवन का आधार था। इसलिए गैर मानवीय होते हुए भी वे मानवीय करुणा से संपन्न थे। वारन हेस्टिंग्स ने उनकी सहानुभूती और क्षमता को पहचान लिया था। इतिहास के पृष्ठों में अंकित उनकी छवि कहानी में अनेक रूपांतरणों से गुज़रती हैं। उत्तर औपनिवेशिक दौर में दौलत से प्रेरित प्राइवेट कंपनियाँ हर सार्वजनिक ढाँचे का ध्वस्त कर स्थितियों को अपने पक्ष में मोडने में कामयाब रही है। उत्तर औपनिवेशिक मानसिकता के स्रोत औपनिवेशिक इतिहास में अनेक संदर्भों में पाये जाते हैं।

5.4 मैंगोसिल

मैंगोसिल एक लंबी कहानी है जो मनुष्य की विडंबना और विवशता का जीवंत दस्तावेज़ बन गई हैं। इस कहानी का प्रारंभ महाविनाश के प्राक्कथन से होता है। यही प्राक्कथन कहानी के अंत तक आते आते एक अविराम त्रासदी के रूप में बदल जाता है। सृष्टि, विनाश और फिर नए सिरे से सृष्टि यही जीवन की निरंतरता है। मनुष्य जीवन इसी के बीच का है। कहानी का प्रारंभ चन्द्रकांत थोराट के मामूली जीवन से होता है। वह कुचले और उत्पीडित लाखों लोगों में से एक है। उसकी उपस्थिति कहीं दर्ज नहीं होती। कहानी में लाइलाज रोग मैंगोसिल का वर्णन होता है कि इसके कारण सामान्य की तुलना में सिर का आकार बहुत बड़ा और भारी होता है।

बस्तियों में रहनेवालों की मज़बूरियों और विवशताओं भरा जीवन जीने की असफलताओं को आंतरिक सच्चाई के साथ उदय प्रकाश ने चित्रित किया है।

थोराट और पत्नी शोभा का बेटा था सूर्यकांत जिसे वे प्यार से सूरी बुलाते थे। सूरी को मैंगोसिल की बीमारी हो जाती है। कहानी में सूरी का आत्म संघर्ष उसकी गहन पीडा भरी छटपटाहट और पीडायें भूमण्डलीय पूँजीवाद की कराहें हैं। चन्द्रकांत और शोभा का संघर्ष सूरी के निजी संघर्षों के साथ मिल कर समाज का संघर्ष बन जाता है।

उत्तर औपनिवेशिक मानसिक का विमर्श उदय प्रकाश की कहानियों के प्राण हैं। अपनी अलग अलग कहानियों में उन्होंने विशेष ढंग से भारत के औपनिवेशिक इतिहास और भूमण्डलीकरण से पैदा होती नव साम्राज्यवादी हकीकत के अमानवीय पहलुओं पर तीखा प्रहार किया है। वारेन हेस्टिंग्स का साँड, पॉल गोमरा का स्कूटर जैसी कहानियाँ तो सीधे इन मुद्दों से संबंधित हैं। पीली छतरी वाली लडकी, मोहनदास, मैंगोसिल, दिल्ली की दीवार आदि कहानियों में उत्तर औपनिवेशिक इतिहास, बाज़ारवाद, मानवीय अस्तित्व का संकट और नैतिक पतन आदि के अनेक संदर्भ हैं।

'मैंगोसिल' भी उत्तराधुनिकता के विनाश की ओर संकेत करनेवाली कहानी है। मैंगोसिल एक बीमारी का नाम है जो अधिकतर गरीब देशों के बच्चों पर दिखाई देती है। इस बीमारी का लक्षण-यह है कि रोगग्रस्त बच्चे

का सिर तेज़ी से बढ़कर मोटा हो जाता है और अल्पायु में ही उसकी मृत्यु हो जाती है। मैंगोसिल वाले बच्चे का सिर इतना बढ जाता है कि सिर का भार वहन करने में असमर्थ होता है और असह्य वेदना से पीडित रहता है। कहानी में सूरी नामक बच्चे का मैंगोसिल एक प्रतीक है। यह किसी भी देश के असंतुलित विकास का प्रतीक है। संपन्न वर्ग केलिए मेट्रो रेल, शापिंग मॉल, पाँच सितारे होटल आदि का निर्माण गरीब जनता के अस्तित्व को ही मिटा देते हैं। विकास के नाम पर लाखों गरीबों की बस्तियों को यहाँ के बुलडोसर एवं जे.सी.बी. से मिटा दिया जाता है। मैंगोसिल से रोगी का सिर ही मोटा हो जाता है उसी प्रकार विकास मात्र कुबेरों को प्राप्त होता है। जिस प्रकार मोटे सिर का बोझ बच्चा सह नहीं सकता, उसी प्रकार यह इकतरफा विकास समाज भी सह नहीं सकता।

5.5 ....और अंत में प्रार्थना

'.....और अंत में प्रार्थना' का डॉ.वाकण्कर मेडिकल एथिक्स का पालन करनेवाला आदर्श डाक्टर था। शासकों का आज्ञानुवर्ती नहीं था। वे हिन्दू धर्म का अटल विश्वासी और पक्षघर था और उस समय हिन्दुत्व पार्टी का शासन था। पुलीस ने कुछ मुसलमान लडकों को गोली मारकर हत्या की। यह सरकार को कलंकित करनेवाली घटना थी। पोस्ट मार्टम का दायित्व वाकणकर पर था। सरकार ने आदेश दिया कि रिपोर्ट ऐसा तैयार करो कि लडके की मृत्यु गन इन्जुरी से नहीं स्टोन इन्जुरी से हुई। धमकी,

दबाव, परिवार का संहार आदि के बावजूद भी रिपोर्ट बदलने केलिए डॉ.तैयार नहीं हुए। डर से कांपते हुए एक प्रार्थना श्लोक गाते हुए उसने सच्चे रिपोर्ट पर हस्ताक्षर किये। तनाव के कारण ब्रेन हेमरेज का शिकार होकर डाक्टर वहीं गिर पडा। वे कॉमा में पड जाते हैं। कहानी के द्वारा उदय प्रकाश ने वर्तमान कपट-साम्प्रदायिक सौहार्द एवं खतरनाक शासन व्यवस्था का पर्दाफाश किया है। साथ ही सत्ता, पुलीस एवं गुंडों के हाथों से संचालित व्यवस्था पर भी लेखक ने प्रहार किया है।

'....और अंत में प्रार्थना' कहानी, राजनीतिक, धार्मिक व्यवस्था की छल कपट तथा भ्रष्टाचार युक्त समाज की झूठी अवधारणाओं को सच्चाई के साथ प्रस्तुत करती है। इसमें चिकित्सा के क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार, निस्वार्थ चिकित्सकों पर वर्तमान व्यवस्था का दबाव और आदिवासी स्त्रियों पर होनेवाले शोषण का पर्दाफाश किया गया है। गंदे और भ्रष्ट राजनैतिक वातावरण और उसकी विसंगतियों पर आधारित यह कहानी मूल्य विघटन का यथार्थ दस्तावेज़ है।

5.6 मोहनदास

भारतीय समाज में दलितों के जीवन की एक अलग कहानी है। अभाव और उपेक्षा उनके जीवन के ही अंग बन गए। मोहनदास नामक लंबी कहानी में उदय प्रकाश ने हाशिए के दलितों के स्वत्व हनन और अरक्षित जीवन की त्रासदी को चित्रित किया है। मोहनदास ऊँची श्रेणी में उच्च शिक्षा प्राप्त निम्न

श्रेणी का गरीब व्यक्ति है। अथक परिश्रम और तपस्या के बाद उसे नौकरी तो मिली पर नियुक्ति नहीं हुई। उसे पता चला कि उसकी जगह उसके नाम और पते पर एक पूँजीपति का बदमाश बेटा बिसनाथ कार कर रहा है। असली मोहनदास के प्रमाण पत्र सहित सर्वस्व छीनकर ऊँची जाति का बिसनाथ नकली मोहनदास बनकर उसका स्वत्व एवं नौकरी छीन लेता है। अपने को असली मोहनदास सिद्ध करने का वह कठिन प्रयत्न करता है लेकिन उसके खिलाफ नौकरशाही, राजनीति एवं गुण्डागर्दी का संघबद्ध षडयंत्र था। इनके सामने वह अपनी असलीयत स्थापित न कर सका। उसका भूखा परिवार आतंक और गरीबी में तितर-बितर हो जाता है। प्राणों की रक्षा केलिए, पुलीस की नित्य नारकीय प्रताडना से छुटकारा पाने केलिए सत्ता एवं गुंडों के पैरों तले वह अपने स्वत्व का, अस्मिता का तर्पण करता है।

मोहनदास एक डरे हुए व्यक्ति की कहानी है। असल में यह आज के हर आम इनसान की कहानी है। एक साधारण परिवार के एक प्रतिभावान व्यक्ति की कहानी जो समाज की क्रूरता का शिकार है। उसका परिवार तो मेहनती होते हुए भी गरीब है। ईमानदार होते हुए भी मोहनदास ठोकरे खाता है। असल में यह समकालीन समाज की क्रूर सच्चाई है। सत्ताधारियों का भ्रष्टाचार आज किसी से छिपा नहीं है। यह कहानी हमारे समय और समाज का आईना है यह वह व्यक्ति है जो हमारे आस-पास है शायद कहीं हम खुद ही मोहनदास हैं।

उनकी अन्य कहानियों की तरह इस में भी दुःख, मानसिक प्रताडना,

संघर्ष, खोज, बेबसी और लाचारी का बडा मार्मिक चित्रण हुआ है। इस लंबी कहानी में निरंकुश शासकों की बर्बरता अनैतिकता और पतन का चित्रण है। हिन्दी की लंबी कहानी परंपरा को मज़बूती देती यह कहानी हमारे समाज की यथार्थ तस्वीर दिखाती है।

समकालीन सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में नकलियों और जालसाज़ों ने जाल बिछाकर रखा है। सारी व्यवस्थायें इन जातियों के हाथों में है। आज नौकरी केलिए पात्रता अनिवार्य नहीं, वह तो जाति, धर्म, बंधुत्व, रिश्वत, सिफारिश, शराब आदि के आधार पर है। प्रस्तुत कहानी में 'इन्क्वयरी कमीशन' के ढोंग का सच्चा चित्रण है। मोहनदास की आइडेंटिटी की जाँच का अफ्सर बिसनाथ की पत्नी अमिता के सामने अपने कर्तव्य का बलिदान करता है। अमिता की खुली नाभी में मोहनदास की आइडेंटिटी गुम हो जाती है। कहानी के अंत में प्राणों की रक्षा केलिए रोते-बिलखते मोहनदास का दारुण चित्र पाठकों के दिल पिघला देता है।

जनतंत्र में जन की सुरक्षा सरकार का दायित्व है। पुलीस इसकेलिए ही बनी है। लेकिन समकालीन युग में स्थिति उलटी हो गई है। जनरक्षा पुलीस जनभक्षक बन जाती है। गुण्डों एवं बदमाशों का दमन उनका कर्तव्य और धर्म है लेकिन आज वह इनका नमन करते दिखाई देते है। साधारण जन तो पुलीस का शिकार रह गया। ' टेपचु', 'भाई का सत्याग्रह', 'थर्ड डिर्गी' जैसी कहानियों में पुलीस की नृशंसता का चित्रण हुआ है।

5.7 टेपचु

अनाथ टेपचु एक कारखाने का मज़दूर था और वह मज़दूर संघ का नेता भी था। स्वाभाविक रूप से वह मिल मालिक का शत्रु बन जाता है। उसने मालिक और पुलीस के अन्यायों का विरोध किया औह पकडा गया। पुलीस ने उसे पीटकर जीप के पीछे रस्सी से बाँध कर खसीटा और गोली मारकर हत्या की। हत्यारे पुलीस टेपचु की हत्या का अपराध उसके साथियों के सिर मढ़ देती है। मरे हुए टेपचु का मृत शरीर भी इस अन्याय के खिलाफ गरज उठता है– "डाक्टर साब, ये सारी गोलियाँ निकाल दो। मुझे बचा लो। मुझे इन्हीं कुत्तों ने मारने की कोशिश की है।"

5.8 भाई का सत्याग्रह

'भाई का सत्याग्रह' कहानी में भाई की दुर्गति इससे भी भयानक है। भाई गाडी पर सवार कर रहा था। रास्ते के पुल पर टोल टैक्स वसूली की चौकियाँ थीं। चुंगी के ठेकेदार ज्यादातर गुण्डे होते हैं। चूँगी का ठेका लेनेवाले ये ठेकेदार ज़्यादातर गुंडे, अपराधी या गाँजे-शराब का व्यापार करनेवाले लोग होते हैं। राजनीतिक पार्टियों के लिए कार्यकर्ता जुटाने, चुनाव के लिए वाहन का बंदोबस्त तथा उम्मीदवारों के स्थानीय खर्च के लिए पैसा जुटाने का काम यही लोग करते हैं। पुलिस, आबकारी विभाग तथा सत्ताधारी राजनीतिक दलों को ये हफ्ता या माहवारी देते रहते हैं। भारतीय लोकतंत्र का ग्रास रूट या आधार यही अपराधी ठेकेदार होते हैं। बूथ कैप्चरिंग, फर्जी मतदान, विरोधी उम्मीदवार

की हत्या या अपहरण का अनिवार्य भारतीय लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व यही लोग निभाते हैं।

कानून के मुताबिक एक बार टोल टैक्स देनेवाले को उसी दिन बिना टैक्स टिकट के टोलों से गुजरने की अनुमति है। भाई ने एक टोल पर पैसा जमा किया। लेकिन अगले टोलवाले गुण्डे ने फिर टैक्स अदा करने की धमकी दी। पुलीस ने भी गुण्डों का साथ दिया और भाई पर प्रहार किया।

कानून के मुताबिक एक बार टोल टैक्स देने के बाद चौबीस घंटे के लिए एक राज्य के भीतर की सड़क पर यात्रा के लिए वह रसीद पर्याप्त होती थी। लेकिन असल में ऐसा होता नहीं था। हर छोटे-बड़े चुंगी नाके पर ठेकेदार के गुंडे बैठे रहते थे और इस बात की बिना परवाह किए कि किसी ने पहले पर्ची कटा ली है या नहीं, वहाँ से गुजरनेवाली गाड़ी से दुबारा पैसा वसूल लेते थे। इसमें पुलिस और स्थानीय शासन के कुछ कर्मचारियों का भी हाथ था।

ज्यादातर ट्रांसपोर्टर यह बात जानते थे कि उनके ट्रकों या वाहनों से इस तरह की दुबारा-तिबारा वसूली गैरकानूनी है, लेकिन इस तरह कितने झमलों और झंझटों में फँसा जाए, इससे बचने के लिए वे अपने ड्राइवरों को दो-चार सौ रुपये ऊपर से पकड़ा देते थे। उन्हें हिदायत रहती थी कि पहले तो दुबारा पैसा देने से मना करो, लेकिन अगर चुंगी-नाके के गुंडे मारपीट पर उतर आयें तो उनसे पंगा मोल लेने के बजाय चुपचाप पैसे देकर आगे बढ़ लो।

भाई ने सडक पर ही सत्याग्रह शुरू किया। भाई कह रहे थे, "तुम लोग जानते ही, आज कौन-सी तारीख है? आज दो अक्टूबर है। गाँधी जयंती। और गाँधी जी ने कहा था कि हर पुलिसवाला वर्दी के भीतर साधारण नागरिक होता है और हर नागरिक बिना वर्दी का पुलीसवाला। मैं बिना वर्दी का पुलिसवाला हूँ। और मैं तुसमे कह रहा हूँ कि तुम साधारण नागरिकों को लूट रहे हो।"

इसी बीच एक गुण्डा ने भाई के सिर पर लाठी मारी। भाई सड़क पर गर गए। उधर अँधेरा था इसलिए साफ-साफ दिखाई नहीं देता था। भाभी और एक-दो महिलाएँ जो जीप में थीं, वे ज़ोर-ज़ोर से रोने लगीं।

गुण्डों ने भाई के पैरों के ऊपर ट्रक चला दिया, पैर टूटकर चूर चूर हो गए। पैर की हड्डियाँ सड़क की सख्त मिट्टी के साथ पिसकर चूर-चूर हो गईं। पैर मांस का लोथड़ा बन गया जिसमें सड़क की गर्द, धूल, कोलतार सब मिल गए। भाई पर पुलिसवालों ने यातायात रोकने, सरकारी ड्यूटी में लगे शासकीय कर्मचारियों को धमकाने और उनके कर्तव्यपालन में बाधा डालने तथा उस इलाके में अशांति फैलाने का जुर्म कायम किया था। अन्याय और अनीति के विरुद्ध कर्तव्य निभाने के बदले पुलीस अन्याय के शिकार पर मुकदमा दर्ज करती है।

5.9 थर्ड डिर्गी

'थर्ड डिर्गी' कहानी में नायक सुरेश के घर से लाखों रुपए के आभूषणों

की चोरी हुई। सुरेश अच्छी तरह जानता है कि चोर फकीरा ही है। पुलीस ने फकीरा को पकडा और मारा। अधमरा होने पर भी फकीरा ने चोरी कबूल नहीं की। सुरेश को सूचना मिली कि चोरी किए गए आभूषणों का पता चल गया है लेकिन माल 'ऊँची जगह' पर है। फकीरा ने चोरी का सारा माल चीफ मुनिसिपल आफीसर गुप्ता की पन्ती को कम दाम में बेचा था। गुप्ता तो राज्य मंत्री का निकट संबंधी था। सुरेश की पत्नी का मंगलसूत्र अब सी.ए.ओ. की पत्नी के गले में पडा है।

समकालीन समाज में यही स्थिति देखने को मिलती है कि सुरक्षा अधिकारी ही सब से बडा चोर निकलता है। राजनीति, पुलीस और अफसरशाही के गठबंधन में साधारण जन त्रस्त हैं। आज पुलीस करोडपतियों की सहायता करने में खुश रहती हैं। गरीब जनता इस व्यवस्था के विरुद्ध आवाज़ उठायेगी तो उसका टेपचु जैसा ही अंत हो जाएगा। न्याय केलिए सत्याग्रह करनेवाले भाई के पैर तोड दिए गए। ये पैर केवल भाई के नहीं बल्कि इनसाफ और ईमान के भी हैं। इस भीषण परिवेश में डर और आतंक से मानवीय संवेदनाएँ जड हो गईं। उदय प्रकाश की प्रस्तुत कहानी इस कपट नीति और व्यवस्था पर कुठाराघात करती है।

5.10 छप्पन तोले का करधन

'छप्पन तोले का करधन' एक बूढी दादी की करुण कहानी है। दादी अपने घर के निकट की एक गंदी कोठरी में नारकीय पीडा का अनुभव करती

थी। घरवालों ने उसकी उपेक्षा की थी और वे दादी को शत्रु मानने लगे। उनकी धारणा थी कि दादी के पास छप्पन तोले का करधन है और बूढी ने उसे जादू से कहीं छिपाकर रखा है। गरीब बंधुजन करधन के सपने देखते हैं और न मिलने पर दादी के प्रति अत्याचार और अमानवीय व्यवहार करते हैं। सच तो यह थी कि दादी के पास कोई करधन नहीं था। सबों से उपेक्षित दादी एक दिन गली में मर जाती है। मरते ही बेटा कोठरी खोदकर करधन की तलाश करता है। न मिलने पर घर खोदने लगा। घरवालों ने रोका पर उसने नहीं माना।

करधन एक आभूण का नाम है जो धनी लोग कमर में पहना जाता था। लेकिन उदयप्रकाश की प्रस्तुत कहानी छलपन तोले का करधन एक ऐसे गरीब परिवार की कहानी है जिसकी बुजुर्ग दादी के पास शायद करधन है - ऐसा परिवारवाले सोचते हैं। तो करधन के इर्द-गिर्द घूमती हुई यह करीनी पुराने ग्रामीण परिवार के विडंबनापूर्ण जीवन को साकार करती है और उन करुण स्थितियों को उभारती है जिसमें वह परिवार जीने केलिए विवश है। अभाव के कारण मनुष्य की मानसिक संरचना कुछ इस तरह हो जाती है कि वह भाग्य पर विश्वास करने लगता है। मन में पाश्विक स्थितियाँ मज़बूत हो जाती हैं और मानवीय भाव करने लगते हैं। इसलिए बंधुजन करधन न मिलने पर दादी के शत्रु हो गए। उसे एक अंधिदारी कोठरी में जीने केलिए छोड दिया था।

यद्यपि कथावस्तु छोटी है फिर भी यह अभाव के कारण उत्पन्न धनलिप्सा का सच्चा चित्र प्रस्तुत करती है। धन लिप्सा ही बंधुजन को अंधविश्वासी एवं

अमानवीय व्यवहार के लिए प्रेरित करता है। इससे उनकी मानवीय संवेदनायें खो जाती हैं। और उनके मन में पाश्विक मनोवृत्तियों जन्म लेती हैं। खून के रिश्ते खूनी रिश्ते में बदल जाता है। वास्तव में दादी ने अपना करधन बेचकर ही संतानों का पालन-पोषण किया था। लेकिन संतानें उसी करधन के लिए माँ के खून के प्यासे हो गए थे। अपने भविष्य केलिए बेचैन बेटा अपनी बूढी माँ के दारुण वर्तमान को अनदेखा करता है। यह वर्तमान जीवन की सबसे बडी विडंबना है।

5.11 मठाधीश

'मठाधीश' और 'आचार्य का कुत्ता' कहानियों में मुख्य चरित्र कुत्ता है। मठाधीश का कुत्ता अनाथ और अधमरा है। अन्य कुत्तों से पीडित उसके धावों से मवाद और खून निकल रहा है । एक दिन भूख के कारण वह बाहर निकला। तब सडक के किनारे बैठे हुए एक आदमी ने उस पर पत्थर मारा। सिर फटे कुत्ते की चीख सुनकर ईश्वर धरती पर उतर आया और कुत्ते को शांति प्रदान की। ईश्वर के पूछने पर पत्थरमारने वाले व्यक्ति ने कहा कि दुर्बल प्राणियों को मारना उसका कर्तव्य है। ईश्वर ने कुत्ते से पूछा कि उस नीच को क्या दण्ड देना चाहिए? कुत्ते ने कहा कि उस व्यक्ति को कहीं मठाधीश बना देना। ईश्वर को आश्चर्य हुआ तो कुत्ते ने कहा कि पिछले जन्म में वह मठाधीश था। ईश्वर ने उस व्यक्ति को मठाधीश बना दिया। इस कहानी में कहानीकार ने मठाधीशों पर तीव्र प्रहार किया है। मठाधीश जैसे पदमोहियों से कुछ मंत्री के

जूते चाटकर या मंत्री पर मंगल गीत लिख कर साहित्य संस्थाओं की कुर्सियों पर आसीन होते हैं। सब से बडा जन शोषक जनकल्याण संस्था के अधीश ही होते हैं। धर्म की संस्थाओं के मठाधीश ईश्वर को भी बेचकर जेब भरा देते हैं। इसलिए कहानीकार उसे गली के कुत्ते का पुनर्जन्म देता है। कहानी का लाचार कुत्ता दुर्बल मानव का भी प्रतीक है जो समाज से निरंतर उत्पीडित है। कुत्ते पर पत्थर फेंकनेवाला उत्तारधुनिक संवेदनशून्य ग्लोबल मानव का प्रतीक है जो कमज़ोर मनुष्य का शिकार करते हुए खुशियाँ मनाते हैं।

5.12 रुक्कु

'रुक्कु' कहानी में नियति की क्रूर विडम्बनाओं से आहत एक गरीब युवती और उसके छोटे बच्चे की करुण त्रासदी का चित्रण किया गया है। कहानी का लेखक पत्नी समेत एक तंग कमरे में रहता था। वहाँ माया नामक एक नौकरानी आती थी। उसका छोटा बच्चा था रुक्कु जो लेखक के लिए बहुत प्यारा था। रुक्कु लेखक के पास छुट्टे पैसे केलिए आता था तो लेखक सिक्के देता था। स्वाभिमानी माया तो बच्चे को डाँटती थी। एक दिन छुट्टे केलिए रुक्कु लेखक के पास आया, लेखक ने प्यार से सिक्के दिये। कुछ देर बाद लेखक पान की दुकान की ओर चला तो लेखक को लगा कि वह स्वयं एक चिडिया है और आकाश में उडने लगा है। उसे यह भी लगा कि माया और रुक्कु भी चिडियाँ हैं। लेखक कहते हैं – "मैंने देखा, उसकी आँखें सचमुच किसी चिडिया की आँखें जैसी थीं। बाद में बडे होने पर, बच्चे ये आँखें कहाँ

खो देते हैं।"[7] दूकान पहुँचकर पानवाले से बातें कर रहा था तब रुक्कु के साथ माया वहां आयी। वे टोफियाँ खरीदकर खुशी से चले गये। अचानक सडक पर एक दुर्घटना हुई। मेरी यह आवाज़ अचानक एक बहुत डराहने, चीखते-दहाडते यांत्रिक विस्फोट में डूब गई। यह भयावह शोर उधर हुआ था जिधर गेट था और अभी कुछ ही समय पहले माया रुक्कु के साथ जिधर गई थी। लोगों के साथ लेखक भी वहाँ दौड पडे। उस दुर्घटना में रुक्कु मारा गया, उसका शरीर सडक से चिपट गया था। रुक्कु के जीवन के सारे रहस्य उस सड़क पर बुझ कर काले और घूसर रंगों में बदल रहे थे। यह दारुण दृश्य देखकर लेखक का होश उड गया। होश में आते ही उसने माया को देखा। माया उस टायर के सामने पत्थर की मूर्ति सी खडी थी जिस टयर से रुक्कु का दारुण अंत हुआ था। लेखक उस माँ को सांत्वना देना चाहता था। लेकिन उस दिन के बाद उसने माया को कहीं नहीं देखा। इस तरह 'रुक्कु' विधि की निष्ठुर विडम्बना से आहत एक गरीब माँ की त्रासदी की कहानी है। माया गरीब थी लेकिन स्वाभिमानी थी। दूसरों के घर पर काम करके अपने बच्चे का पालन करती थी। रुक्कु केलिए वह जी रही थी लेकिन निष्ठुर नियति ने रुक्कु के प्राणों को छीन लिया। असल में प्राइवेट बसों के मालिक और चालकों के कारण ही रुक्कु मारा गया था। लेकिन उनके विरुद्ध कोई कुछ नहीं कर सकते थे। रुक्कु का दारुण अंत पाठकों के दिल को कचोटता है।

उदय प्रकाश की कहानियाँ समकालीन समाज के उत्तराधुनिक कालखण्ड का दस्तावेज है। इन में गत तीस-चालीस वर्षों के भारतीय परिवेश की

गतिविगतियाँ अंकित हुई हैं। उनकी कहानियों को किसी एक विशेष प्रवृत्ति के अंतर्गत समेटना मुश्किल है। प्रत्येक कहानी की अंतचेतना और बाह्य स्वरूप अलग-अलग है। ये कहानियाँ उत्तराधुनिक संस्कृति की विकल मनोवृत्तियाँ, भूमण्डलीकरण प्रदत्त औपनिवेशिक संस्कार की छाया, भूमण्डलीकृत विकास, उपभोक्ता संस्कार जन्य उत्तारधुनिक मृत संवेदना, स्वत्व हीन जन की विवशता, नृशंस पुलीस व्यवस्था, मूल्य भ्रष्ट न्याय व्यस्था, राजनीति, धर्म एवं गुंडागर्दी का गठबंधन, अभावग्रस्त आम आदमी की तडप, शिक्षा जगत में व्याप्त पादसेवा, जातीयता, नारी उत्पीडन, कामुकता आदि वर्तमान समय के यथार्थ को चित्रित करती हैं।

उदय प्रकाश हिन्दी के उत्तराधुनिक प्रयोगधर्मी कथाकार है। उन्होंने समकालीन हिन्दी कहानी के ढाँचे को बदल दिया। उदय प्रकाश समकालीन उत्तराधुनिक समय के संप्रेषक हैं और उनकी कहानियाँ समकालीन सामाजिक जीवन की धडकन को अभिव्यक्ति करती हैं।

5.13 पीली छतरी वाली लडकी

'पीली छतरी वाली लडकी' कहानी बाज़ार की ब्रांडिग और मानवीय अस्मिता और आस्वाद तक को बदल डालने की साजिशों की तरफ ध्यान दिलाती है। ठंण्डा मलतब कोका कोला जैसा विज्ञापन अपनी तानाशाही और वर्चस्व को सूचित करता है जो बहुत ही खतरनाक है। बाज़ारीकरण और भूमण्डलीकरण ने अपने अनंत विज्ञापनों और लालचों द्वारा मनुष्य के मूल

जीवन एवं मूल अनुभव को छित्त भिन्न कर दिया है। नव उपनिवेशवाद हमारी विकासशील व्यवस्था का अदृश्य संचालक है। इस कहानी के द्वारा कहानीकार ने बुरी व्यवस्थाओं के प्रति अपना प्रतिरोध और आक्रोश प्रकट किया है।

5.14 आचार्य का कुत्ता

'आचार्य का कुत्ता' कहानी में वफादार कुत्ते के प्रति घृणित व्यवहार करनेवाले एक विश्वविद्यालय के आचार्य की लंपटता का चित्रण है। अध्यापन वृत्ति के बदले यौन वृत्ति करनेवाले एक विभागाध्यक्ष की विकृतियों का चित्रण इस कहानी में हुआ है।

संदर्भ

1. उदय प्रकाश - पॉल गोमरा का स्कूटर - कहानी संग्रह - पृ.सं.49

2. उदय प्रकाश - पॉल गोमरा का स्कूटर - कहानी संग्रह - पृ.सं.66

3. उदय प्रकाश - पॉल गोमरा का स्कूटर - कहानी संग्रह - पृ.सं.77

4. उदय प्रकाश - पॉल गोमरा का स्कूटर - कहानी संग्रह - पृ.सं.40

5. उदय प्रकाश - वारन होस्टिंग्स का सांड - पृ.सं.104

6. उदय प्रकाश - वारन होस्टिंग्स का सांड - पृ.सं.158

7. रुक्कु - संग्रथन - दिसंबर 2010 - पृ.सं.15

अध्याय - छः

उपसंहार

उपसंहार

समाज, सामाजिक संबंधों की एक व्यवस्था है। प्रत्येक व्यक्ति पैदा होते ही समाज में पलता है, उसी में ही पलकर बडा होता है और परंपरा एवं संस्कार को प्राप्त करता है। इस प्रकार व्यक्ति समाज का आजीवन सदस्य बन जाता है। समाज में सहयोग और संघर्ष की भावना पायी जाती है। क्यों कि दोनों समाज के संदर्भ में एक दूसरे के पूरक हैं। सामाजिक भावना केवल प्राणियों में ही पायी जाती है। स्त्री और पुरुष परस्पर मिलकर परिवार का निर्माण करते हैं। उनमें सादृश्य है, क्योंकि दोनों मानव हैं। उनमें भिन्नता भी है क्योंकि दोनो में लिंग भेद है। अर्थात् समानता एवं भिन्नता समाजिक प्रगति के लिए आवश्यक है। मनुष्य के विकास एवं उन्नति केलिए आवश्यक सारी परिस्थितियाँ समाज में विद्यमान है।

मनुष्य एवं समाज की उन्नति में धर्म, संस्कृति, ज्ञान एवं साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण है। धर्म के आधार पर मनुष्य अपने जीवन को अनुचित ढंग से व्यवस्थित कर सकता है। उसमें सत्कर्म, सद्भाव, प्रेम आदि भावनायें पैदा होती हैं। संस्कृति का संबंध हमारे आचार और व्यवहार से हैं जिनसे समाज सामूहिक रूप से प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है। संस्कृति ही व्यक्तित्व का आधार है। सुसंस्कृत व्यक्तियों का समाज अधिक प्रगतिशील

होता है। मनुष्य को विवेकशील बनने केलिए ज्ञान आवश्यक है जो शिक्षा से ही प्राप्त होता है। शिक्षा के द्वारा ज्ञान प्राप्त करके वह अपने को मानवीय गुणों से संपन्न बनाता है। साहित्य भी मानव हित के लिए ही रचा जाता है। उसमें सहित का भाव ही है। साहित्य के अंतर्गत शब्द और अर्थ के सहभाव से साहित्यकार जिसका सृजन करता है वही साहित्य है। साहित्यकार अपने विचारों को अलग-अलग विधाओं में सृजन करते हैं जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि। सभी साहित्य के अंतर्गत आते हैं। उत्कृष्ट रचनाओं के द्वारा समाज का उत्थान और मानव का कल्याण होता है। सामाजिक भावों और विचारों की प्रतिछाया होने के कारण साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। साहित्य से समाजिक संस्कृति की रक्षा होती है।

समकालीन युग में मानव समाज विभिन्न समस्याओं का सामना कर रहे हैं जिनका समाधान अभी तक नहीं हुआ है। वैश्वीकरण, उदारीकरण, उपनिवेशवाद, बाज़ारवाद आदि के कारण आम जनता का जीना दूभर हो गया है। विकास के नाम पर किसानों की भूमि हडप ली जाती हैं। अपना स्वत्व, अस्मिता और अस्तित्व तीनों खोने की स्थिति में जनता निस्सहाय है। इन्हीं स्थितियों का चित्रण उदय प्रकाश ने अपनी कहानियों में किया है।

हिन्दी में कहानी साहित्य का विशेष महत्व है। कहानी कहने-सुनने की

प्रवृत्ति बहुत पुरानी है। प्राचीन काल से लेकर समकालीन समय तक हिन्दी साहित्य में सैकडों कहानियाँ लिखी गईं। इस साहित्य के विधा को समृद्ध बनने वालों की संख्या भी अधिक है। फिर भी प्रेमचंद, प्रसाद जैसे प्रतिभा के धनी कहानीकारों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। समकालीन युग में पुरुषों के समान ही अनेक महिला साहित्यकारों ने अनेक कहानियों की रचना करके इस विधा को आगे बढ़ाया और समृद्ध किया।

उदय प्रकाश सामाजिक युग के अत्यधिक प्रतिभा संपन्न कहानीकार है। उन्होंने अपनी कहानियों में समकालीन सामाजिक जीवन की विभिन्न पहलुओं का बारीकी से चित्रण किया है। उत्तराधुनिक वैश्वीकरण से जन्मी विकृत मानसिक के विरोध के स्वर उनकी कहानियों में मुख्य हैं। उपनिवेशवाद, बाज़ारवाद आदि ने परंपरागत सांस्कृतिक मूल्यों को कुचल दिया है। इनके प्रति उदय प्रकाश ने अपनी कहानियों द्वारा विरोध किया है। अपनी संस्कृति और अस्मिता को बनाये रखने में समाज का साथ देना प्रतिबद्ध साहित्यकार का कर्तव्य है। उदय प्रकाश ने अपने इस कर्तव्य को पूरी तरह निभाया है।

उदय प्रकाश जी ऐसे ही कहानीकार हैं जिन्होंने आधुनिक युग की जीवन्त कला, जीवन्त वस्तु-शिल्प एवं जीवन्त संवेदना की अभिव्यक्ति के कारण पाठकों के हृदय पर अपनी अमिट छाप छोड़ी हैं। वे सच्चे अर्थों में

युगसंचालक कहानीकार हैं जिनकी कहानियों में संवेद्य की नई आहट है, नव परिवर्तन की झाँकी है, उत्तारधुनिक परिवेश की मनोवृत्तियों के विरोध के स्वर हैं और मानवीय संवेदनाओं को आत्मसात करने की ललक है। उनकी कहानियाँ यदि नव संचेतना का उद्घोष करती हैं तो परम्परागत सांस्कृतिक मूल्यों से विरक्ति का विरोध भी करती जान पड़ती हैं।

उत्तराधुनिक पाश्चात्य संस्कृति जिसे वैश्वीकरण के नाम पर भारतीय जनमानस ने अपने परम्परागत सांस्कृतिक मूल्यों को कदाचित भुलाकर आत्मसात करना आरम्भ कर दिया है, उसी परिवेश के गर्भ से कदाचित उदय-साहित्य ने अपनी संवेदनात्मक अभिव्यक्ति की है। इसी कारण उदय प्रकाश जी को उत्तराधुनिक हिन्दी कथा-साहित्य का प्रतिष्ठापक कहानीकार कहना सर्वथा उचित होगा।

उदय प्रकाश की अधिकांश कहानियों में उत्तराधुनिक वैश्वीकरण की कीख से जन्मी विकृत मानसिकता के विरोध के स्वर गूँजते नज़र आते हैं। उनकी कहानियाँ हिन्दी कहानी की प्रचलित रचनाधर्मिता से पृथक एक नवसृजन की धारा को प्रवाहित करती जान पड़ती है। 'दरियाई घोड़ा', 'तिरिछ', 'और अंत में प्रार्थना', 'पॉलगोमरा का स्कूटर', 'पीली छतरीवाली लड़की', 'दत्तात्रेय के दुःख', 'अरेबा-परेबा', 'मोहनदास', 'मैंगोसिल' आदि संग्रहों की कहानियों

में वैश्वीकरण के उभरते परिवेश में जनमानस की पीड़ा, असहजता, असमंजसता और विषमताओं को अत्यंत सजीवता से प्रस्तुत की गईं और इनमें मानवीय संवेदनायें भी प्रचुरता से दृष्टिगोचर होती हैं। इसका यही कारण है कि भूमण्डलीकरण की आक्रामक पैंतरेबाजी के वर्तमान ज़माने में, जब उसका सबसे बडा एवं व्यापक हस्तक्षेप भारतीय संस्कृति पर पड रहा है, तब उदय प्रकाश जैसे जनवादी साहित्यकार चुप नहीं रह सकता।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि उदय प्रकाश की कहानियाँ उत्तराधुनिक युग का अभिलेख है जिसमें गत तीस से अधिक वर्षों के भारतीय परिवेश समाहित हैं। उनकी कहानियों में उत्तराधूनिक संस्कृति की विकल मनोवृत्तियाँ, भूमण्डलीकरण से उत्पन्न औपनिवेशिक संस्कार की छाया, भूमंडलीकृत विकास, उपभोक्ता संस्कार, जन्य उत्तराधुनिक जड संवेदना, वृशंस पुलीस व्यवस्था, मूल्य भ्रष्ट न्याय व्यवस्था भ्रष्ट राजनीति एवं गुण्डावादी का गठ बंधन, स्वत्वहीन जनता की लाचारी, अभावग्रस्त आम आदमी की पीडा, शिक्षा जगत में व्याप्त जातीयता, कामुकता, पाद-सेवा, नारी उत्पीडन आदि समकालीन समय के तमाम अनुभूत यथार्थ का जीता जागता चित्रण हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

क्रम संख्या	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
	आधार ग्रंथ			
1.	उदय प्रकाश	तिरिछ	वाणी प्रकाशन	1990
		और अंत में प्रार्थना	वाणी प्रकाशन	1994
		पॉल गोमरा का स्कूटर	नई दिल्ली	1997
		पीली छतरीवाली लड़की	नई दिल्ली	2001
		मोहनदास	वाणी प्रकाशन	2006
	सहायक ग्रन्थ			
1.	अशोक हज़ारे	समकालीन परिवेश और प्रासंगिक रचना संदर्भ	विकास प्रकाशन कानपुर	1988 प्रथम सं.
2.	कमलेश्वर	नई कहानी की भूमिका	शब्दाकार प्रकाशन दिल्ली	1978 प्रथम सं.
3.	डॉ.खिरडे	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानियों में अभिव्यक्त कस्बाई चेतना	माया प्रकाशन नई दिल्ली	1994 प्रथम सं.
4.	प्रहलाद अग्रवाल	हिन्दी कहानी सातवें दशक	दि मैकमिलन कं. मद्रास	1977 प्रथम सं.
5.	डॉ.प्रेमचन्द्र नारायण सिंह	आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य में समसामयिक जीवन की अभिव्यक्ति	अनुपम प्रकाशन पटना	1980 प्रथम सं.
6.	डॉ.भेरू लालगर्ग	स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में सामाजिक परिवर्तन	चित्रलेखा प्रकाशन कानपुर	1966 प्रथम सं.

क्रम संख्या	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
7.	डॉ.भू.ह.राजूरकर, डॉ.भगवानदास वर्मा	नयी कहानीः दृष्टि और सृष्टि	पुस्तक संस्थान कानपुर	1978 प्रथम सं.
8.	मंजुलाराणा	दसवें दशक के हिन्दी उपन्यासों में साम्प्रदियाकि सौहार्द	वाणी प्रकाशन	2012 प्रथम सं.
9.	मधु धवान	नारी लेखन और समकालीन समाज	क्लासिक पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली	2012 प्रथम सं.
10.	डॉ.मिथलेश राहेतगी	हिन्दी की नयी कहानी का मनोवैज्ञानिक अध्ययन	शुलभ बुक हाउस मेरठ	1974 प्रथम सं.
11.	यदुनाथ सिंह	समकालीन हिन्दी कहानी: प्रकृति और परिदृश्य	चित्रालेखा प्रकाशन इलाहाबाद	1977 प्रथम सं.
12.	राहुल भारद्वाज	नवें दशक की हिन्दी कहानी में मूल्य विघटन	जवाहर पुस्तकालय मथुरा	1999 प्रथम सं.
13.	डॉ.रामदरश मिश्र, डॉ.नरेन्द्र मोहन	हिन्दी कहानीः दो दशक की यात्रा	नेशनल पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली	1978 प्रथम सं.
14.	वीरेन्द्रसिंह यादव	हिन्दी कला साहित्य में पारिवारिक विघटन	नमन प्रकाशन नई दिल्ली	2010 प्रथम सं.
15.	डॉ.संतबख्स सिंह	नयी कहानीःनये प्रश्न	साहित्यलोक	1981 प्रथम सं.

क्रम संख्या	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
16.	सावित्री चन्द्र	हिन्दी कहानी : एक मूल्यांकन	भापा प्रकाशन नई दिल्ली	1978 प्रथम सं.
17.	डॉ.सुरेश घीगड़ा	हिन्दी कहानी:दो दशक	अभिनव प्रकाशन नई दिल्ली	1978 प्रथम सं.
18.	श्री.सुरेन्द्र	नयी कहानी:प्रकृति और पाठ	परिवेश प्रकाशन जयपुर	1978 प्रथम सं.
19.	सं.सत्यप्रकाश मिश्रा	कथाकार ज्ञानरंजन का रचना संसार	नयी कहानी प्रकाशन इलाहाबाद	1981 प्रथम सं.
20.	सेठ,राजेन्द्र कुमार मेहरोत्रा	समकालीन कहानी :	गिरनार प्रकाशन	1982

पत्र –पत्रिकायें

1. केरल ज्याति — नवंबर 2013
2. दस्तावेज़ — जुलाई - दिसंबर 2005
3. नया ज्ञानोदय — अगस्त 2013
4. समकालीन साहित्य समाचार — मई 2010
5. साहित्य अमृत — सितंबर 2014
6. हंस — दिसंबर 2000